SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

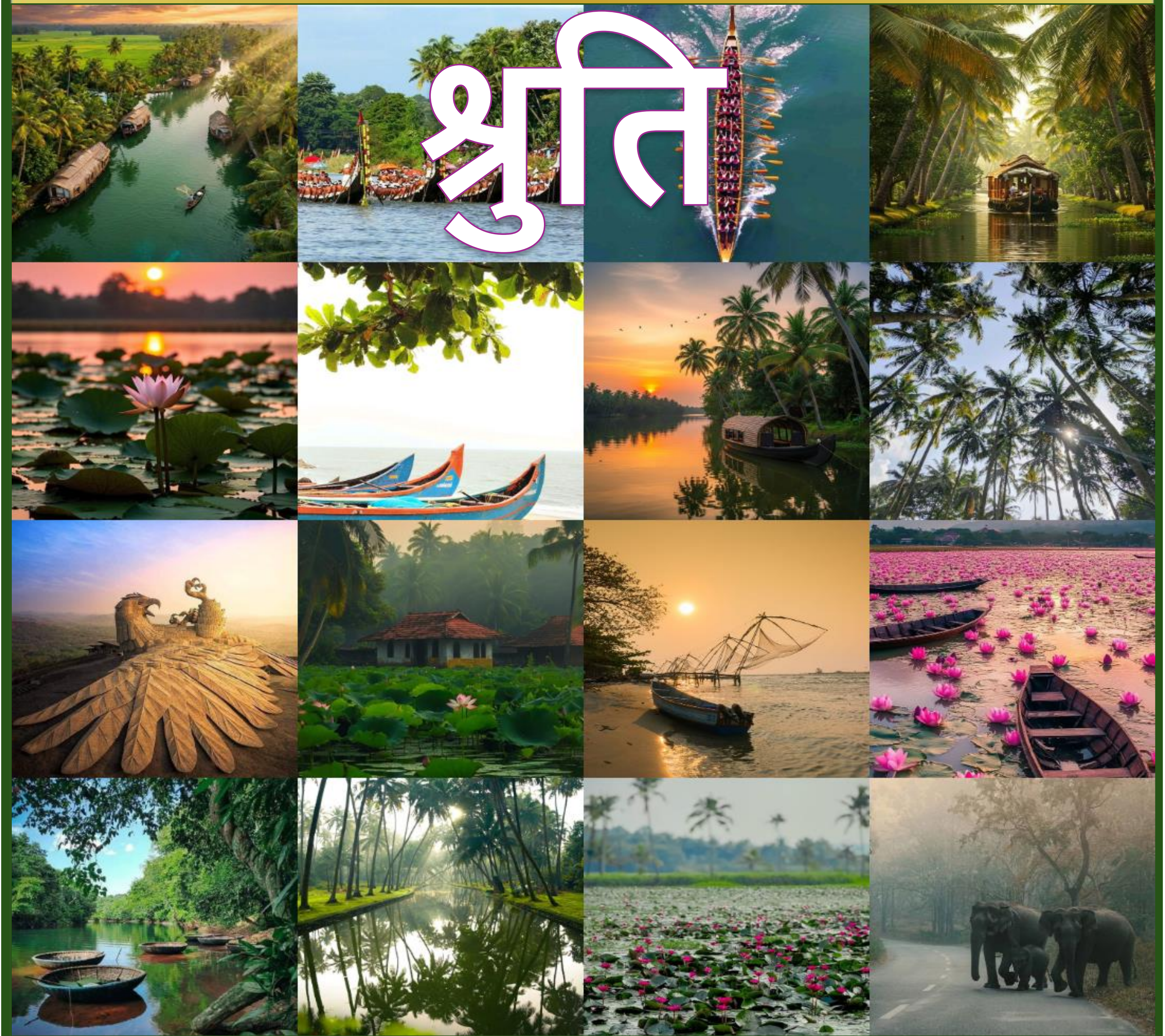

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695 001

सत्यमेव जयते

भारत सरकार

गृह मंत्रालय

राजभाषा विभाग

(सदैव ऊर्जावान : निरंतर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केंद्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरंतर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज़ से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाये रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे; अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिंदी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा !

जय हिंद !

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका
(38वां अंक)
(01 अक्तूबर 2025 से 31 मार्च 2026 तक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001

मुख्य संरक्षक

श्री विष्णुकांत पी बी
महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री बाषा मोहम्मद बी
उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री एन दिनकरन
वरिष्ठ उप महालेखाकार

सुश्री उषा एस पिल्लई
उप महालेखाकार

सुश्री अखिला बी एस
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

सुश्री के आर रोहिणी
सहायक निदेशक (राजभाषा), संपादक

सुश्री एस संध्या
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सुश्री गेलीकृष्णा सी जी
सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादन सहयोग

सुश्री निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री अंकित पाल
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री प्रज्ञा मौर्या
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपादक मंडल

❖ अनुक्रमणिका ❖

क्र.सं.	विषय	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1.	संरक्षक की कलम से ...		6
2.	मुख्य संपादक की कलम से ...		7
3.	आपके पत्र		8
4.	ऑडिट दिवस 2025		13
5.	हिंदी: राष्ट्र की आत्मा और एकता का माध्यम	कृष्ण कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	18
6.	जल ही जीवन है	रोहिणी के आर, सहायक निदेशक (रा.भा.)	20
7.	कार्य संस्कृति में परिवर्तन: आधुनिक कार्यालय की नई पहचान	राहुल कुमार राय, सहायक लेखा अधिकारी	26
8.	अमीर खुसरो और उनकी पहली हिंदी कविता	निधिलक्ष्मी, वरिष्ठ अनुवादक	28
9.	गणतंत्र दिवस समारोह 2026 की झलकियां		32
10.	ओणम समारोह 2025 की झलकियाँ		33
11.	केरल में फुटबॉल का जुनून	जिनु अब्राहम, सहायक पर्यवेक्षक	34
12.	राजस्थान-दुर्गों की भूमि	रेणुका जोशी, कनिष्ठ अनुवादक	37
13.	हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा समारोह 2025 की रिपोर्ट		41
14.	डिजिटल युग में मानवीय स्पर्श: क्या हम मशीन बनते जा रहे हैं ?	राहुल कुमार राय, सहायक लेखा अधिकारी	55
15.	धरती की सांस - भगवतीप्रसाद वाजपेयी		58
16.	वह और मैं	राहुल कुमार राय, सहायक लेखा अधिकारी	61
17.	मिट्टी का घर	पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी	64
18.	वृद्धावस्था: जीवन का स्वर्णिम काल	निधिलक्ष्मी, वरिष्ठ अनुवादक	65
19.	तिरुक्कुरल		66
20.	आम प्रयोग के अंग्रेज़ी-हिंदी वाक्यांश		67
21.	वार्षिक कार्यक्रम 2026-2027		69
22.	01.10.2025 से 31.03.2026 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्ति		71

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्री विष्णुकांत पी बी आईएएएस

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल

संरक्षक की कलम से....

राजभाषा एवं सर्जनात्मकता के प्रति प्रतिबद्धता की प्रतीक कार्यालयीन गृह पत्रिका 'श्रुति' का यह 38वां अंक आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए हर्ष व आत्मिक संतोष का अनुभव हो रहा है । राजभाषा का संवर्द्धन करने के साथ ही भिन्न-भिन्न विधाओं की रचना से समृद्ध यह पत्रिका कर्मचारियों को उनके रचना कौशल का प्रदर्शन करने का मंच प्रदान कर उनकी प्रतिभा का भी संवर्द्धन करती है । पत्रिका के प्रकाशन की अनवरत यात्रा के इस 38वें पड़ाव में राजभाषा के प्रति अनुराग व उत्साह, सर्जनात्मक प्रतिभा, प्रकाशन कार्य से संबंधित सूझबूझ और दायित्वों का ईमानदारी से निष्पादन स्पष्ट परिलक्षित होता है । सुंदर आवरण से लेकर समस्त सरस रचनाओं, तस्वीरों के प्रासंगिक स्थलों पर सुंदर प्रयोग सहित अंतिम पृष्ठ तक पत्रिका सराहनीय है ।

समस्त सहभागी कर्मचारी एवं संपादक मंडल पत्रिका के सफलतापूर्वक प्रकाशन के लिए बधाई के पात्र हैं । पत्रिका की गुणवत्ता में निरंतर सुधार व उत्साहवर्द्धन के लिए आप सुधी पाठकों के बहुमूल्य सुझावों और प्रतिक्रियाओं की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा रहेगी ।

महालेखाकार

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्री बाषा मोहम्मद बी आईएएएस
उप महालेखाकार (प्रशासन)

मुख्य संपादक की कलम से.....

पत्रिका के इस नवीन अंक के प्रकाशन द्वारा एक नए उत्साह का संचार हुआ है । कार्यालयीन कार्य में कुशल कर्मचारियों ने अपनी रचनाओं यथा लेखों से ज्ञान व परिष्कृत विचारों तथा कविता, कहानी आदि के माध्यम से अपने भावों का सुंदर व प्रतिभापूर्ण परिचय दिया है । पत्रिका में रचनाओं के साथ ही कार्यालय परिसर के महत्वपूर्ण आयोजनों जैसे हिंदी दिवस तथा ऑडिट दिवस का भी वर्णन है । साथ ही वर्षों की सेवा के बाद सेवानिवृत्त होने वाले पदधारियों का वर्णन भी शामिल है ।

पत्रिका में भाग लेने वाले सभी रचनाकारों को शुभकामनाएं । प्रकाशकीय दायित्व को कुशलतापूर्वक और श्रमसाध्य तरीके से निभाने के लिए विशेष शुभकामनाएं । आशा है यह अंक आप पाठकों की अपेक्षाओं पर खरा उतरेगा एवं आप अपनी प्रतिक्रियाओं से हमें अवश्य अवगत करायेंगे।

उप महालेखाकार (प्रशासन)

आपके पत्र ...

ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕಛೇರಿ, ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सत्यमेव जयते

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/401 दिनांक :06.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम

विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"श्रुति"** के 37वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"श्रुति"** के 37वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- सुश्री सिंधु सी.सी. का लेख - **'राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी'**, श्री पारस कुमार शिवा की कहानी - **'कोरी स्लेट'**, श्री वीरेंद्र कुमार की कविता - **'सुबह की पहली चाय'**, श्री हिमांशु राज की कविता - **'केरल की यादें'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 06-02-2026
11:14:04
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
पंजाब एवं यू.टी., सैक्टर 17-ई, चंडीगढ़ - 160017.
Office of The Accountant General (A&E),
Punjab & U.T., Sector-17 E,
Chandigarh – 160017.
Phone: 0172-2702906, 2703117, 2709576
Fax – 0172-2702286
Mail: agaepunjab@cag.gov.in

आज़ादी का अमृत महोत्सव

सं.- रा.भा.अनु./पत्रिका समीक्षा/पत्र-10/I/1315689/2026 दिनांक:16-02-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.), केरल
तिरुवनन्तपुरम - 695001

विषय: हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की पावती प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका **'श्रुति'** के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ अति मनोहर एवं आकर्षक है।

पत्रिका में श्री पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी की रचना **'वो चरण ढूंढता हूँ'**, श्री वीरेन्द्र कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की रचना **'रेत की इबारत'** तथा श्री हिमांशु राज, लेखाकार की रचना **'दृष्टियों का संगम'** विशेष रूप से प्रशंसनीय है। पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने हेतु संपादकीय परिवार ने पूर्ण प्रयास किए है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

यह पत्र उपमहालेखाकार (प्रशा.) महोदया के अनुमोदन से जारी है।

भवदीय

सहायक निदेशक (राजभाषा)

1

File No. [illegible] (Computer No. [illegible])
Generated from eOffice by RAKESH RANJAN MISHRA, [illegible], ASSISTANT DIRECTOR (OFFICIAL LANGUAGE), AG (A&E) PUNJAB on [illegible]

महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम

OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-II)
KERALA, THIRUVANANTHAPURAM - 695 001

सं.लेप.II/हिंदी कक्ष/पत्रिका/2025-26 दिनांक : 12-02-2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय
तिरुवनंतपुरम - 695001

विषय :- पत्रिका की पावती – बाबत्

महोदय,

आपके कार्यालय की अर्धवार्षिक हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक के ई-संस्करण की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ धन्यवाद । पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है और संपूर्ण सामग्री उत्कृष्ट और ज्ञानप्रद है । विशेषकर श्री हिमांशु राज का लेख 'दृष्टियों का संगम', श्रीमती सिंधु सी.सी. का लेख 'राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी' एवं सुश्री आरती राघव का लेख 'हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में परस्पर समभाव' तथा श्री वीरेंद्र कुमार की कविता 'रेत की इबारत' एवं श्री पारस कुमार शिवा की कविता 'वो चरण ढूंढता हूँ' विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं । श्री अंकित पाल द्वारा लिखित लेख 'चोल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था' चोल साम्राज्य का एक उल्लेखनीय वर्णन हैं । पत्रिका की सभी रचनाएँ लेखकों की सृजनात्मकता एवं हिंदी के प्रति रुचि को दर्शाती हैं । सार्थक सामग्री के चयन हेतु बधाई ।

पत्रिका को सुरुचिपूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई एवं पत्रिका के अगले अंक के लिए अग्रिम शुभकामनाएँ ।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष / Telephone :0471 – 2330899 ई-मेल / e-mail : agaukerala2@cag.gov.in फैक्स / Fax – 0471-2330699
वेबसाइट /Website : https://cag.gov.in/ag2/kerala/en

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) हरियाणा, प्लॉट नंबर 5, सैक्टर 33-बी, दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT) HARYANA, PLOT NO. 5, SECTOR 33-B, DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020

संख्या: हिंदी कक्ष/पत्रिका/प्रतिक्रिया/2025-26/359
दिनांक/Dated:(.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले.एवं ह.)
केरल का कार्यालय
तिरुवनंतपुरम

विषय - हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका **'श्रुति'** की ई-प्रति प्राप्त हुई है। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका में मौलिक सोच और अभिव्यक्ति की गहनता समाहित हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के आगामी अंक एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

सहायक निदेशक
(राजभाषा)

आपके पत्र ...

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, रेलवे, शाखा कार्यालय, जयपुर

संख्या: लेप/मु./प्रशा./पुस्तकालय/विविधपत्राचार/2022-23/ दिनांक: 05-02-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),

कार्यालय प्रधानलेखाकार (लेखा एवं हकदारी),

केरल, तिरुवनन्तपुरम-695001

विषय:- हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक की प्राप्ति पर प्रशंसा से संबंधित।।

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 37 वे अंक" के ई-संस्करण की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका की साज-सज्जा, विषय एवं आवरण पृष्ठ अति मोहक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल उच्चकोटि की ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी व पठनीय है अपितु सामाजिक पहलूओं पर भी प्रकाश डालती है।

1. श्री पारस कुमार शिवा, सहायक लेखा अधिकारी की कविता "वो चरण ढूंढता हूं"
2. श्री वीरेन्द्र कुमार, सहायक लेखा अधिकारी की कविता " सुबह की पहली चाय"
3. केरल के राज्य प्रतीकों से संबंधित लेख विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका का संपादक मंडल विशेष तौर पर बधाई का पात्र है। पत्रिका की सफलता एवं उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया,

SUDESH KUMARI
सहायक निदेशक (राजभाषा)
जयपुर

भारतीय लेखा तथा लेखापरीक्षा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय (केन्द्रीय), मुंबई
O/o the PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL), MUMBAI
C-25, Audit Bhavan, Bandra Kurla Complex, Mumbai- 400 051
e-mail – pdacentralmumbai@cag.gov.in

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सं.प्र.नि.ले.(कें)/रा.भा./हिं.प.स./I/1315722/2026 दिनांक - 16-02-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक,
प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी),
केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001

विषय – हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक के ई-संस्करण का अग्रेषण – के संबंध में

महोदय/महोदया,

प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी), केरल का कार्यालय, से दिनांक 04.02.2026 को ईमेल द्वारा आपकी हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। पत्रिका में कार्यालय के पदधारियों ने गागर में सागर भरने का कार्य किया है। विभिन्न विषय-वस्तु पर रचनाकारों ने अपने विचार रखे हैं जो पत्रिका को रोचक, एवं सार्थक व पठनीय बनाते है। विशेषकर श्रीमती सिंधु सी सी, स.ले.अ. द्वारा रचित "राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी", श्री हिंमाशु राज, लेखाकार द्वारा रचित "दृष्टियों का संगम", आरती राघव, लेखाकार द्वारा रचित "हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में परस्पर समभाव" उत्कृष्ट लगे। शेष रचनाएं भी पाठकवृंद के ज्ञान में वृद्धि करती है।

भवदीया,

SUMITH S
सहायक निदेशक

कायालय प्रधान महालेखाकार(लेखा व हक) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक :- रा.भा.क./पत्रिका/समीक्षा/के-42/2025-26/ दिनांक :-

सेवा में,
संपादक
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), केरल
तिरुवनंतपुरम

विषय :– हिंदी गृह पत्रिका '**श्रुति** ' के **37वें** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका '**श्रुति** ' के **37वें** अंक के ई-संस्करण की प्राप्ति हुई। इस पत्रिका में संगृहीत सभी रचनाएँ प्रभावशाली रोचक एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित रेणुका जोशी का लेख '**चलचित्र और इतिहास** 'श्री हिमांशुराज की कविता '**केरल की यादें** 'विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीय

ApprovedByName
डॉ(सुभाष चंद यादव)
सहायक निदेशक/राजभाषा

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, गॉर्टन कैसल
शिमला - 171 003

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

Office of the Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh,
Gorton Castle, Shimla-171 003

सं.रा.भा.अ./ले.प./बाह्यपत्रिका/I/1305653/2026 दिनांक: 06-02-2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (ले.व ह.),
केरल, तिरुवनंतपुरम-695001

विषय:- हिंदी गृह-पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक के ई- संस्करण की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी **पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की ई-प्रति** प्राप्त हुई। इसके लिए सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ठ, पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। इस अंक में प्रकाशित लेख विशेष रुप से उल्लेखनीय है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: +91-177-2652607 E-mail: agauhimachalpradesh@cag.gov.in

आपके पत्र ...

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक०)
उत्तराखंड, ऑडिट भवन, कौलागढ़,
देहरादून-248195

Office of the Accountant General (A&E)
Uttarakhand, Audit Bhavan, Kaulagarh,
Dehradun-248195

दूरभाष: 0135-2970866, फैक्स: 0135-2970859, https://cag.gov.in/ae/uttarakhand/en, E-mail: agaeuttarakhand@cag.gov.in

पत्र सं.26.रा.भा.अनु./विभागीय पत्रिकाएँ/2025-26 दिनांक

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केरल, तिरुअनंतपुरम-695001

विषय:- हिन्दी पत्रिका "श्रुति" के 37 वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "श्रुति" का 37 वां अंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में श्री हिमांशु राज की कविता "केरल की यादें", श्री परस कुमार की कविता "वो चरण ढूंढता हूँ", श्री वीरेंद्र कुमार की कविता "रेट की इबारत" एवं संकलन कक्ष द्वारा संकलित लेख "केरल राज्य के प्रतीक" सहित सभी रचनाएँ मनमोहक, सरस एवं संग्रहणीय है एवं सभी रचनाकारों के हिन्दी के प्रति अगाध प्रेम का प्रतीक है।

इस अंक में सम्मिलित लेख, कविताएँ, संस्मरण एवं विचारात्मक रचनाएँ न केवल लेखकों की साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देती हैं, बल्कि हिन्दी भाषा की सरलता, अभिव्यक्ति-क्षमता और प्रभावशीलता को भी उजागर करती हैं। यह पत्रिका हमारे सहकर्मियों को हिन्दी में सोचने, लिखने और सृजन करने के लिए प्रेरित करती है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया

Digitally signed by
Poonam Sharma
Date: 09-02-2026
16:33:14

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय- महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II, महाराष्ट्र, नागपुर
O/o the Accountant General (Audit)-II, Maharashtra, Nagpur

सं.हि.अनु./म.ले.(ले.प.-II)/प्रतिक्रिया/20/2025-26/जा.क्र. दिनांक: 20/02/2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय- प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केरल, तिरुवनन्तपुरम

विषय:- हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक की पावती के संबंध में ।

महोदय/महोदया,
आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख, कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री हिमांशु राज, लेखाकार की कविता 'केरल की यादें', सुश्री सिंधु सी सी, स.ले.अ. का लेख 'राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी', श्री पारस कुमार शिवा, स.ले.अ. का लेख 'कोरी स्लेट', श्री अंकित पाल, कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'चोल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था' आदि रचनाएँ उल्लेखनीय एवं सराहनीय है।

पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

(उप महालेखाकार/ प्रशासन के अनुमोदन से जारी)

भवदीया,

सहायक निदेशक/राजभाषा

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
रेलवे, गुवाहाटी – 781 011

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
RAILWAY, GUWAHATI – 781 011

संख्या- प्रशासन/10-4/2025/82(2)/भाग-II/899
दिनांक- 09.02.2026

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम – 695001

विषय- *हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की ई-प्रति के संबंध में।*

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सादर धन्यवाद। पत्रिका का मुख-पृष्ठ एवं आंतरिक साज-सज्जा आकर्षक है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं मनोरंजक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर, श्रीमती सिंधु सी सी की रचना 'राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी', श्री हिमांशु राज की कहानी 'दृष्टियों का संगम', तथा श्री पारस कुमार शिवा की कविता 'वो चरण ढूंढता हूं' प्रशंसनीय हैं। केरल के राज्य प्रतीकों से संबंधित जानकारी रोचक एवं ज्ञानवर्धक है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन एवं संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), पंजाब,
चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
PUNJAB, CHANDIGARH
फोन : 0172-2783108, फैक्स 0172-2703149 Email-agaupunjab@cag.gov.in

क्रमांक: रा. अनु./पत्रिका समीक्षा/2025-26/150 दिनांक : 09.01.2026

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) केरल,
तिरुवनन्तपुरम-695001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की समीक्षा।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित पत्रिका **'श्रुति' के 37वें** अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका प्रेषण हेतु धन्यवाद। इस पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएँ सुपाठ्य, बोधगम्य तथा उच्चकोटि की हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं विषयवस्तु का सुंदर प्रस्तुतिकरण अत्यंत प्रशंसनीय है। राजभाषा हिंदी की प्रगति की दिशा में पत्रिका का यह अंक एक सराहनीय प्रयास है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

आपके पत्र ...

प्रधान महालेखाकार (ले0&ह0) का कार्यालय
वीरचंद पटेल पथ,
पटना, बिहार – 800001

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E),
BIRCHAND PATEL PATH
PATNA, BIHAR - 800001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक/Letter No.:- हि.अ./ले. व हक./5/पत्रिका प्रतिभाव/25-26/ 157
दिनांक/Date:- 20.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा),
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) केरल का कार्यालय,
तिरुवनन्तपुरम -695001

विषय:- हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक के ई-संस्करण की अभिस्वीकृति एवं प्रतिक्रिया।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक की प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बहुत ही मनमोहक है। विविध विधाओं से अलंकृत यह पत्रिका न केवल प्रेरणादायी व पठनीय है, बल्कि सामाजिक पक्षों से जुड़े कई संदेश भी देती है। पत्रिका में समाहित कुछेक रचनाएँ यथा, चलचित्र और इतिहास, रेत की इबारत, सुबह की पहली चाय, केरल के राज्य प्रतीक एवं राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी विशिष्टतः उल्लेखनीय हैं। आशा है कि पत्रिका "श्रुति" राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के कार्मिकों की हिंदी में काम-काज को बढ़ावा देने में प्रेरक की भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के उत्तम संपादन हेतु पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है। पत्रिका के सतत् प्रकाशन एवं उज्जवल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय

Digitally signed by
SUNIL KUMAR
Date: 20-02-2026
17:50:17
सहायक निदेशक (राजभाषा)

Phone: 0612-2225634 Fax: 0612-2221056 Email: agaebihar@cag.gov.in

---

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक – 111 दिनांक 19.02.2026

प्रति,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले व ह) केरल का कार्यालय,
तिरुवनंतपुरम -695001

विषय: हिन्दी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक के ई-संस्करण की पावती बाबत।
संदर्भ: आपका पत्र सं हिन्दी कक्ष /हि.गृ.प.-श्रुति/2025-26दिनांक 04.02.2025।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय "श्रुति" के 37वें अंक के-संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर चलचित्र और इतिहास, सोशल मीडिया की नकारात्मकता और उसका प्रभाव, शिक्षा में निवेश समृद्ध भविष्य का पासपोर्ट है, कोरी स्लेट, चोल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था, आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं।

प्रफुल
सहायक निदेशक / राजभाषा

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल का कार्यालय
ट्रेज़री बिल्डिंग्स, 2,गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता – 700 001

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
TREASURY BUILDINGS, 2, GOVT. PLACE (WEST),
KOLKATA - 700 001

सं. राजभाषा अनुभाग/हिंदी पत्रिका/पावती/246
दिनांक:16.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी),
केरल, तिरुवनंतपुरम – 695001

विषय:- हिंदी ई-गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वां अंक की पावती संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय के पत्र सं. हिंदी कक्ष/हि.गृ.प.-श्रुति/2025-26, दिनांक 04.02.2026 के माध्यम से आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "श्रुति" की प्राप्ति हुई। धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ सुंदर एवं आकर्षक है। "श्रुति" में समाहित सभी रचनाएं रोचक, प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है। विशेष रूप से सुश्री रेणुका जोशी की रचना 'चलचित्र और इतिहास', सुश्री सिंधु सी सी की रचना 'राजभाषा हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं की कड़ी', श्री पारस कुमार शिवा की रचना 'वो चरण ढूंढता हूं', श्री राहुल कुमार राय की रचना 'शिक्षा में निवेश, समृद्ध भविष्य का पासपोर्ट है' इत्यादि सराहनीय है। आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका के उतरोत्तर प्रगति की शुभकामनाएं।

भवदीय,

शंकर लाल सरकार 16/2/26
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

PHONE : 2213-3151/3152/3163 FAX : (033) 2213-3174 E-Mail - agauwestbengal1@cag.gov.in

---

क्षेत्रीय क्षमता निर्माण एवं ज्ञान संस्थान
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
20, सरोजनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

REGIONAL CAPACITY BUILDING & KNOWLEDGE INSTITUTE
Indian Audit & Accounts Department
20, Sarojini Naidu Marg, Prayagraj – 211001

पत्रांक- क्षे.क्ष.नि.ज्ञा.सं.(प्र.)/पत्रिका पावती(132)/2025-26/ 547 **दिनांक : 16.02.2026**

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
केरल, तिरुवनन्तपुरम- 695001

विषय:- हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की पावती।

संदर्भ:- ईमेल से प्राप्त पत्र दिनांक 04.02.2026

महोदय,

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'श्रुति' के 37वें अंक की प्राप्ति हुई। इस हेतु सादर धन्यवाद।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं विषय वस्तु बेहतरीन है। इस अंक मे प्रस्तुत लेख न केवल ज्ञानवर्धक हैं, बल्कि वे कार्मिकों की रचनात्मक क्षमता, बौद्धिक दृष्टि और सामाजिक संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त करते हैं। पत्रिका में सम्मिलित समस्त रचनाएं प्रशंसनीय एवं रोचक हैं। विशेषांक में प्रकाशित लेखों की भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण और तथ्यात्मक है। चित्रों, संदर्भो और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संतुलित संयोजन विषय को और अधिक जीवंत बनाता है।

ऐसे सार्थक और गुणवत्तापूर्ण विशेषांक के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की निरंतर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

16.2.26
वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी/सलाहकार

Phone:- 0532-2423485 Fax : 0532-2423485 E-mail- rtiallahabad@cag.gov.in

आपके पत्र ...

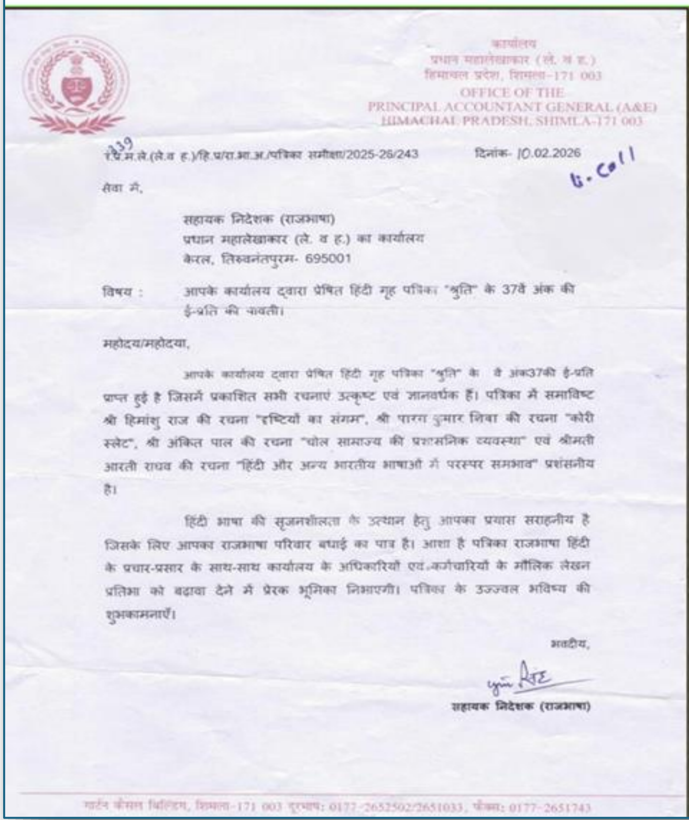

कार्यालय
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171 003
OFFICE OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMACHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

प्र.म.ले.(ले.व ह.)/हि.प/रा.भा.अ./पत्रिका समीक्षा/2025-26/243 दिनांक- 10.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले. व ह.) का कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम- 695001

विषय : आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37वें अंक की ई-प्रति की पावती।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के वें अंक37की ई-प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री हिमांशु राज की रचना "दृष्टियों का संगम", श्री पारस कुमार शिवा की रचना "कोरी स्लेट", श्री अंकित पाल की रचना "चोल साम्राज्य की प्रशासनिक व्यवस्था" एवं श्रीमती आरती राधव की रचना "हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में परस्पर समभाव" प्रशंसनीय है।

हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका प्रयास सराहनीय है जिसके लिए आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है। आशा है पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171 003 दूरभाष: 0177-2652502/2651033, फैक्स: 0177-2651743

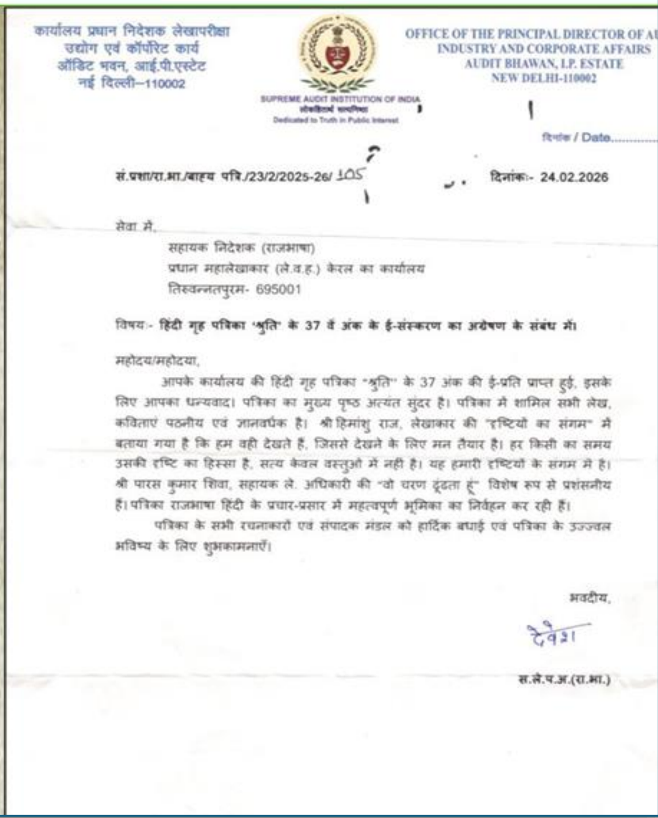

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली-110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
Dedicated to Truth in Public Interest

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

दिनांक / Date.........

सं.प्रशा/रा.भा./बाह्य पत्रि./23/2/2025-26/ 105 दिनांक:- 24.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
प्रधान महालेखाकार (ले.व.ह.) केरल का कार्यालय
तिरुवनन्तपुरम- 695001

विषय:- **हिंदी गृह पत्रिका 'श्रुति' के 37 वें अंक के ई-संस्करण का अवेषण के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 37 अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, इसके लिए आपका धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ अत्यंत सुंदर है। पत्रिका में शामिल सभी लेख, कविताएं पठनीय एवं ज्ञानवर्धक है। श्री हिमांशु राज, लेखाकार की "दृष्टियों का संगम" में बताया गया है कि हम वही देखते हैं, जिससे देखने के लिए मन तैयार है। हर किसी का समय उसकी दृष्टि का हिस्सा है, सत्य केवल वस्तुओं में नहीं है। यह हमारी दृष्टियों के संगम में है। श्री पारस कुमार शिवा, सहायक ले. अधिकारी की "वो चरण ढूंढता हूं" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर रही हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

भवदीय,

स.ले.प.अ.(रा.भा.)

भारत के माननीय उपराष्ट्रपति श्री सी पी राधाकृष्णन ने 16.11.2025 को नई दिल्ली स्थित भारत मंडपम में ऑडिट दिवस समारोह का उद्‌घाटन किया। ऑडिट दिवस भारत की नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षा संस्था की स्थापना के 166वें वर्ष के शुभारंभ का प्रतीक है तथा सार्वजनिक संसाधनों के प्रबंधन में पारदर्शिता, जवाबदेही तथा सुशासन को बढ़ावा देने में इसकी भूमिका का कीर्तिगान करता है।

इस अवसर पर माननीय उपराष्ट्रपति ने सुशासन के संवर्धन में सहायक के रूप में कार्य करने तथा कार्यपालिका की जवाबदेही को सुदृढ़ करने हेतु लेखापरीक्षा प्रक्रियाओं में परिवर्तन लाने में संस्थान की महत्वपूर्ण प्रगति की सराहना की। उन्होंने यह रेखांकित किया कि लेखापरीक्षा अब केवल एक अतीतमुखी-प्रक्रिया नहीं रह गई है, बल्कि सुधार, दूरदृष्टि और नवाचार का एक भविष्यमुखी साधन बन गई है।

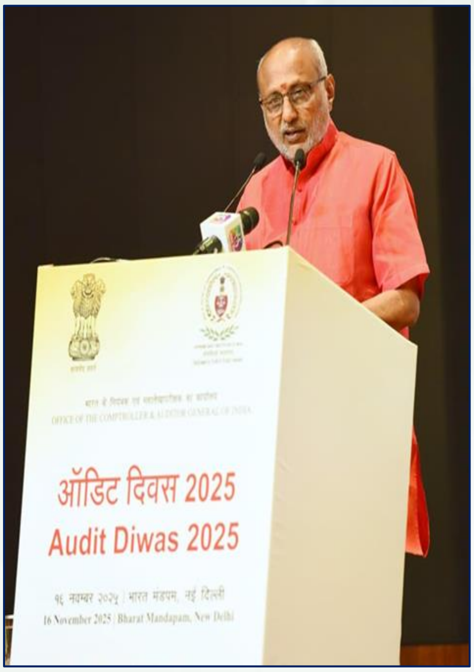

माननीय उपराष्ट्रपति ने आईआईटी और आईआईएम जैसी प्रतिष्ठित शैक्षणिक एवं पेशेवर संस्थाओं के साथ संस्थागत सहयोग के माध्यम से क्षमता निर्माण के क्षेत्र में हाल ही में की गई पहलों के लिए सीएजी संगठन की सराहना की। उन्होंने आर्थिक, सामाजिक, तकनीकी, पर्यावरणीय और संस्थागत क्षेत्रों में समग्र विकास की दिशा में सरकार के प्रयासों में एक विश्वसनीय भागीदार के रूप में सीएजी की भूमिका पर विश्वास व्यक्त किया, जिससे विकसित भारत 2047 की दिशा में राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त होगा।

माननीय उपराष्ट्रपति ने एशियाई सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (एसोसाई) के अध्यक्ष तथा अंतरराष्ट्रीय सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्थानों के संगठन (इंटोसाई) की अनेक समितियों के अध्यक्ष के रूप में अंतरराष्ट्रीय लेखापरीक्षा क्षेत्र में सीएजी की उपलब्धियों की सराहना की तथा उन्होंने नैतिक, पारदर्शी और प्रौद्योगिकी-सक्षम लेखापरीक्षा के वैश्विक मानक स्थापित करने में भारत की सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था के योगदान को भी सराहा ।

अपने संबोधन में **भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री के संजय मूर्ति** ने सतत सुधार, तकनीकी नवाचार एवं ज्ञान साझाकरण के माध्यम से सार्वजनिक जवाबदेही को सुदृढ़ करने के प्रति संस्था की प्रतिबद्धता दोहराई । उन्होंने संस्थान के जारी परिवर्तन को दिशा देने वाले चार आधारभूत स्तंभों का उल्लेख किया: हितधारक सहभागिता, डिजिटल परिवर्तन, विकसित भारत 2047 के अनुरूपता और क्षमता निर्माण ।

हितधारक सहभागिता के अंतर्गत, उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि संस्था पूर्व-लेखापरीक्षा सहभागिता सहित भागीदारों के साथ चल रही बातचीत के माध्यम से सहयोग को सुदृढ़ कर रही है । सार्वजनिक वित्त से संबंधित आंकड़े अब सुगम प्रारूपों में उपलब्ध कराए जा रहे हैं और जनसंपर्क का विस्तार विद्युत, शहरी विकास तथा पंचायती राज जैसे प्रमुख क्षेत्रों तक किया जाएगा । सीएजी ने यह भी अवगत कराया कि प्रमुख निष्कर्ष और अनुशंसाएं प्रबंधन पत्रों के माध्यम से भारत सरकार के साथ साझा की जा रही है, जिनमें एकीकृत वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (आईएफएमएस) जैसी क्षैतिज लेखापरीक्षाओं से प्राप्त उत्तम प्रथाओं और सुधार के क्षेत्रों को रेखांकित किया गया है । सीएजी ने शिक्षाविदों और शोधार्थियों तक पहुंचने के लिए संगोष्ठियों के आयोजन में आईसीसएसआर के साथ को रेखांकित किया ।

डिजिटल परिवर्तन के अंतर्गत, सीएजी ने दूरस्थ और हाइब्रिड लेखापरीक्षण की दिशा में हुए महत्वपूर्ण बदलाव को रेखांकित किया, जिसके तहत फील्डवर्क से पूर्व ऑडिट डेटाबेस की अनिवार्य डेस्क समीक्षा की जाती है, ताकि अपवादिक प्रवृत्तियों की पहचान हो सके और लेखापरीक्षण अधिक केंद्रित एवं उद्देश्यपूर्ण बनाया जा जा सके । उन्होंने सीएजी-कनेक्ट पोर्टल के शुभारंभ की घोषणा की, जो लगभग 10 लाख लेखापरीक्षित इकाइयों को वास्तविक समय में लेखापरीक्षा कार्यालयों से जोड़ने वाला एक सुसंगत डिजिटल

मंच है । उन्होंने सीएजी-एलएलएम के विकास की भी जानकारी दी, जो एक स्वदेशी रूप से निर्मित बृहद भाषा मॉडल है जिसका उद्देश्य संस्थागत ज्ञान का लाभ उठाना और आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस-संचालित लेखापरीक्षा विश्लेषण को सक्षम बनाना है ।

विकसित भारत 2047 के साथ अनुरूपता पर बोलते हुए, उन्होंने कहा कि संगठन ने विकसित भारत को राष्ट्रीय मिशन के प्रवर्तक के रूप में कार्य करने के लिए अपनी अपनी लेखापरीक्षा प्राथमिकताओं को पुनः संरेखित किया है, जिसमें शहरी स्थानीय सरकारों के निष्पादन का आकलन करने और 100 प्रमुख शहरों में जीवन की सुगमता का मूल्यांकन करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है । इसके बाद एमएसएमई और स्टार्ट-अप पर ध्यान केंद्रित करते हुए ईज़ ऑफ़ डूइंग बिज़नेस पर लेखापरीक्षाएँ की जाएँगी, ताकि प्रक्रिया एकीकरण, शिकायत निवारण और उपयोगकर्ता अनुभव जैसे महत्वपूर्ण कारकों का आकलन किया जा सके, जिससे यह सुनिश्चित किया जा सके कि सुधारों का लाभ उद्यमियों तक ठोस रूप में पहुँचे ।

क्षमता निर्माण के स्तंभ पर, सीएजी ने सूचना प्रौद्योगिकी लेखापरीक्षा डेटा साइंस, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस और साइबर सिक्योरिटी में अत्याधुनिक प्रशिक्षण पहलों के माध्यम से भविष्य के लिए तैयार कार्यबल के विकास पर जोर दिया । उन्होंने एआई चैम्पियंस के रूप में युवा अधिकारियों के एक समर्पित समूह निर्माण के बारे में जानकारी दी, जो नवीन, आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस – संचालित लेखापरीक्षा परियोजनाओं का नेतृत्व कर रहे हैं । संस्थान के 40, 000 से अधिक अधिकारियों और कर्मचारियों की शक्ति को स्वीकारते हुए उन्होंने कहा कि उनकी व्यावसायिकता, दृष्टिकोण, समर्पण और रचनात्मकता ही इस संस्थान की सबसे बड़ी पूँजी है । श्री मूर्ति ने अपने संबोधन का समापन करते हुए यह पुनः स्पष्ट किया कि सीएजी का संकल्प केवल पूर्व के अभिलेखों का परीक्षक बने रहना नहीं है, बल्कि शासन में एक प्रगतिशील साझेदार के रूप में कार्य करना है ।

ऑडिट दिवस समारोह में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें अभिनवता और उत्कृष्टता के लिए सीएजी के पुरस्कार प्रदान करना, लेखापरीक्षा हेतु आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस तकनीक से संबंधित हाल ही में की गई नई पहलों पर तकनीकी प्रस्तुतियाँ, तथा हितधारकों के साथ संचार को बेहतर बनाने और संगठन के भीतर सीखने की क्षमता को बढ़ाने के उद्देश्य से नए सॉफ़्टवेयर का शुभारंभ शामिल थे । 'माई भारत' पोर्टल के माध्यम से सीएजी द्वारा आयोजित राष्ट्रीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता के विजेताओं को इस अवसर पर सम्मानित किया गया ।

पाँच एआई चैम्पियंस ने उनके द्वारा शुरू किए गए पाँच पायलट आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस परियोजनाओं का प्रदर्शन करते हुए यह दिखाया कि लेखापरीक्षा और लेखांकन कार्यों में परिचालन दक्षता बढ़ाने और अधिक प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग कैसे किया जा सकता है ।

ऑडिट सप्ताह समारोह: ऑडिट दिवस 2025 के उपलक्ष्य में केरल स्थित लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालयों द्वारा 19 से 25 नवबर 2023 तक ऑडिट सप्ताह धूम-धाम से मनाया गया । ऑडिट सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित गतिविधियों में आंतरिक और बाहरी कार्यशालाएं, आउटरीच कार्यक्रम, सामुदायिक सेवा परियोजनाएं आदि शामिल थीं । 19 से 24 नवंबर 2025 तक कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया,जिनमें रंगोली, वन मिनट टॉक, इंटर ऑफिस डिबेट, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आदि शामिल थी ।

25 नवंबर 2025 को, ऑडिट सप्ताह समारोह 2025 के समापन दिवस पर, कॉलेज के छात्रों के लिए पूर्वाह्न सत्र में एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। अखिल केरल इंटर-कॉलेजिएट प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (क्यूरियस 2025) आयोजित की गई, जिसमें केरल के विभिन्न कॉलेजों की 47 टीमों ने भाग लिया । इस कार्यक्रम में डॉ. के. वासुकी, आईएएस, सचिव, लोक शिक्षा विभाग ने भी भाग लिया, जिन्होंने सेमीफाइनल दौर के विजेताओं को सम्मानित किया । श्री विष्णुकान्त पीबी आईए एंड एएस, महालेखाकार ने प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र वितरित किए ।

समापन समारोह का आयोजन तिरुवनंतपुरम के टैगोर थिएटर में दोपहर 3.30 बजे किया गया। केरल सरकार के पूर्व मुख्य सचिव श्री के. जयकुमार, आईएएस (सेवानिवृत्त) समारोह में मुख्य अतिथि थे। श्री वी कुरियन आईए एंड एएस (सेवानिवृत्त), पूर्व अतिरिक्त उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक समारोह में सम्मानित अतिथि थे । सुश्री प्रीति अब्राहम, आईए एंड एएस, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1) भी समारोह में उपस्थित थीं।

महालेखाकार महोदय के उद्बोधन के उपरांत, आधिकारिक कर्तव्यों एवं अन्य गतिविधियों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले अधिकारियों को पुरस्कार प्रदान किए गए । साथ ही, ऑडिट सप्ताह समारोह के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भी पुरस्कार वितरित किए गए । तदुपरांत, मनोरंजन क्लब द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

हिंदी : राष्ट्र की आत्मा और एकता का माध्यम

कृष्ण कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

भाषा किसी भी राष्ट्र की पहचान, संस्कृति और विचारधारा का दर्पण होती है। यह केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि समाज की चेतना, परम्परा और राष्ट्रीय एकता की आधारशिला भी होती है। भारत जैसे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक देश में हिंदी एक ऐसी भाषा के रूप में विकसित हुई है, जो देश के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को जोड़ने का कार्य करती है। इसलिए हिंदी का महत्व केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र की आत्मा और जनभावना के प्रतीक के रूप में भी देखा जाना चाहिए।

हिंदी का इतिहास भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक धारा से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह भाषा सरलता, सहजता और व्यापकता के कारण देश के बड़े हिस्से में बोली और समझी जाती है। इसी कारण से स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी हिंदी ने राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महात्मा गांधी ने 1918 में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की आवश्यकता पर बल दिया था। उनका मानना था कि भारत जैसे विशाल देश को एक सूत्र में बाँधने के लिए एक ऐसी भाषा आवश्यक है जिसे अधिकतर लोग समझ सकें।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान सभा में इस विषय पर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ और 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को भारतीय संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। यद्यपि विभिन्न भाषाई परिस्थितियों और प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण अंग्रेज़ी को भी सरकारी कार्यों में स्थान दिया गया, फिर भी हिंदी का महत्व और उपयोग निरंतर बढ़ता रहा है। आज हिंदी भारत में ही नहीं, बल्कि विश्व के अनेक देशों में बोली और समझी जाने वाली प्रमुख भाषाओं में शामिल है।

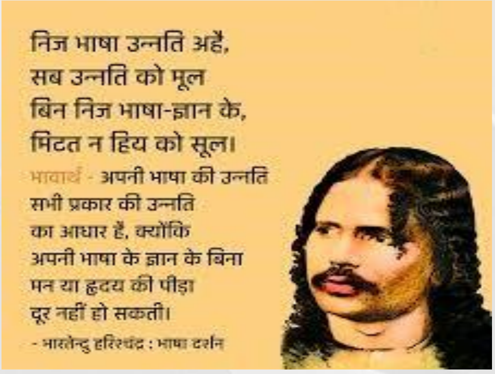

हिंदी केवल संचार का माध्यम नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों की अभिव्यक्ति भी है। महान साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी के महत्व को इन शब्दों में व्यक्त किया है -

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल।"

इन पंक्तियों का सार यह है कि किसी भी समाज की वास्तविक उन्नति उसकी अपनी भाषा के विकास से ही संभव है। यदि कोई समाज अपनी भाषा से दूर हो जाता है, तो वह अपनी सांस्कृतिक जड़ों से भी दूर हो जाता है।

आचार्य विनोबा भावे का भी यह विचार था कि संसार की सभी भाषाओं का सम्मान करना चाहिए, किंतु अपने देश में अपनी भाषा के सम्मान को सर्वोच्च स्थान देना चाहिए। वास्तव में हिंदी भारत की सांस्कृतिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने वाली भाषा है। यह विभिन्न प्रदेशों, संस्कृतियों और समुदायों के बीच संवाद का सेतु बनकर कार्य करती है।

वर्तमान समय में विज्ञान, तकनीक, शिक्षा और प्रशासन के क्षेत्र में हिंदी का उपयोग निरंतर बढ़ रहा है। डिजिटल युग में हिंदी की पहुँच और भी व्यापक हो गई है। इंटरनेट, मीडिया और विभिन्न तकनीकी मंचों के माध्यम से हिंदी वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बना रही है। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि हिंदी केवल अतीत की विरासत नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं से भी जुड़ी हुई भाषा है।

अतः यह आवश्यक है कि हम हिंदी के विकास और प्रसार के लिए सकारात्मक प्रयास करें। अन्य भाषाओं का सम्मान करते हुए भी अपनी भाषा को प्रोत्साहन देना राष्ट्रीय दायित्व है। जब हम अपनी भाषा को गर्व के साथ अपनाते हैं, तभी वह राष्ट्र की प्रगति और सांस्कृतिक समृद्धि का सशक्त माध्यम बनती है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि हिंदी भारत की सांस्कृतिक आत्मा, राष्ट्रीय एकता और जनभावना की भाषा है। इसका संरक्षण और संवर्धन केवल एक भाषाई आवश्यकता नहीं, बल्कि राष्ट्रीय उत्तरदायित्व भी है। यदि हम सभी मिलकर हिंदी के सम्मान और विकास के लिए प्रयास करें, तो यह भाषा न केवल भारत में बल्कि विश्व स्तर पर भी हमारी पहचान को और अधिक सुदृढ़ करेगी।

जल ही जीवन है

रोहिणी के आर
सहायक निदेशक (राजभाषा)

जल जीवन का आधार है । पृथ्वी की सतह का लगभग 71% जल से आच्छादित है, जो अधिकतर महासागरों और अन्य बड़े जल निकायों का हिस्सा होता है । जल उन पदार्थों में से है जो पृथ्वी पर प्राकृतिक रूप से सभी तीन अवस्थाओं में मिलते हैं । यह आसमान में जल वाष्प और बादल; समुद्र में समुद्री जल और कभी कभी हिमशैल; पहाड़ों में हिमनद और नदियां; और तरल रूप में भूमि पर एक्वीफर के रूप में मिलता है । यह ठोस अवस्था (बर्फ) और गैसीय अवस्था (भाप या जल वाष्प) और तरल-क्रिस्टल के रूप में भी पाया जाता है।

जल का उपयोग जब मानव करता है तो यह उसके लिए संसाधन हो जाता है । दैनिक कार्यों से लेकर कृषि में और विविध उद्योगों में जल का उपयोग होता है । जल मानव जीवन के लिए इतना महत्वपूर्ण संसाधन है कि यह मुहावरा ही प्रचलित है कि "जल ही जीवन है", यह उक्ति केवल एक साधारण वाक्य नहीं, बल्कि सृष्टि का सबसे बड़ा सत्य है । पृथ्वी पर जीवन की कल्पना जल के बिना असंभव है । ब्रह्मांड के ज्ञात ग्रहों में से केवल पृथ्वी पर ही जीवन है और इसका मुख्य कारण यहाँ पानी की उपलब्धता है । मानव सभ्यता की शुरुआत से लेकर आज के आधुनिक युग तक, हर जीव और वनस्पति का अस्तित्व पूरी तरह से जल पर ही निर्भर है।

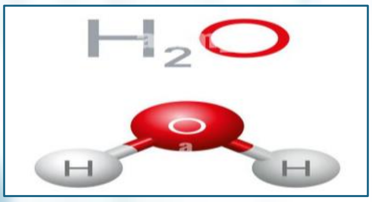

जल का सामान्य अर्थ पानी (या नीर) से है, जो जीवन के लिए एक अत्यंत आवश्यक, रंगहीन, गंधहीन और स्वादहीन प्राकृतिक द्रव है । इसका रासायनिक नाम H_2O है, जिसमें हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के परमाणु होते हैं ।

'जल' शब्द संस्कृत भाषा की धातु 'जल्' से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ 'शीतल होना', 'चमकना' या 'बहना' होता है । वैदिक काल में इसे 'अप' (आप) कहा जाता था । यह एक मूल तत्त्व है और धार्मिक ग्रंथों (जैसे ऋग्वेद और महाभारत) में इसे जीवन का आधार और अमृत माना गया है । जल के अन्य सामान्य नाम पानी, नीर, वारि, तोय, सलिल और पय हैं ।

व्यापक संदर्भ में जल के निम्नलिखित अर्थ और उपयोग हैं:

- ❖ जीवन का आधार
    - यह सभी ज्ञात जीव-जंतुओं और वनस्पतियों के लिए अनिवार्य है ।
    - मानव शरीर का लगभग 50-70% हिस्सा जल से बना होता है ।
    - पृथ्वी की सतह का लगभग 71% भाग जल से ढका हुआ है ।

- ❖ दार्शनिक और प्रतीकात्मक अर्थ (संस्कृत/हिंदी साहित्य में)
    - अमृत: जीवनदायिनी प्रकृति के कारण इसे अमृत भी माना जाता है ।
    - पंच तत्व: भारतीय दर्शन में जल को सृष्टि के निर्माण करने वाले पांच मूल तत्वों (पंचभूत) में से एक माना गया है ।

जल हर जीवित प्राणी की प्राथमिक आवश्यकता है। इसके महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं से समझा जा सकता है:

- शारीरिक आवश्यकता: मानव शरीर का लगभग 50 से 70 प्रतिशत भाग जल से बना है। हमारे शरीर के अंगों के सही तरीके से काम करने, रक्त संचार बनाए रखने और पाचन क्रिया के लिए पानी अनिवार्य है।
- कृषि और भोजन: भारत जैसे कृषि प्रधान देश में फसलें पूरी तरह से पानी पर निर्भर हैं । बिना जल के अनाज का उत्पादन असंभव है ।
- पारिस्थितिक तंत्र: पेड़-पौधे अपना भोजन बनाने (प्रकाश संश्लेषण) के लिए जल का उपयोग करते हैं । यदि पेड़-पौधे नहीं होंगे, तो पर्यावरण में ऑक्सीजन की कमी हो जाएगी।
- दैनिक एवं औद्योगिक कार्य: पीने और खाना पकाने के अलावा, साफ-सफाई, बिजली उत्पादन और बड़े-बड़े उद्योगों को चलाने के लिए भारी मात्रा में जल की आवश्यकता होती है।
- जैविक दृष्टिकोण से, पानी में कई विशिष्ट गुण हैं जो जीवन के प्रसार के लिए महत्वपूर्ण हैं। जीवन के सभी ज्ञात रूप पानी पर निर्भर करते हैं।

💧 जलचक्र

जल लगातार एक चक्र में घूमता रहता है जिसे जलचक्र कहते है । जलचक्र वह निरंतर प्राकृतिक प्रक्रिया है, जिसके द्वारा पृथ्वी का जल वाष्प बनकर आसमान में जाता है, बादल बनता है और फिर बारिश या बर्फ के रूप में वापस पृथ्वी पर लौट आता है । इस चक्र के माध्यम से धरती पर पानी की मात्रा हमेशा संतुलित बनी रहती है ।

जल चक्र के मुख्य चरण:

जल चक्र को पूरा करने में कई महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं शामिल हैं :

- वाष्पीकरण: सूर्य की गर्मी के कारण महासागरों, नदियों और झीलों का पानी गर्म होकर जलवाष्प में बदल जाता है और हवा में ऊपर उठने लगता है ।
- वाष्पोत्सर्जन: पेड़-पौधे अपनी जड़ों से जो पानी सोखते हैं, उसका अतिरिक्त भाग पत्तियों के रंध्रों से भाप बनकर वायुमंडल में छोड़ देते हैं ।
- संघनन: जब जलवाष्प हवा में बहुत ऊपर जाती है, तो यह ठंडी होकर पानी की छोटी-छोटी बूंदों में बदल जाती है। ये बूंदें धूल के कणों के साथ मिलकर बादलों का निर्माण करती हैं ।
- वर्षण/अवक्षेपण: जब बादल पानी की बूंदों से भारी हो जाते हैं, तो वे बारिश, बर्फ या ओलों के रूप में वापस पृथ्वी पर गिरते हैं ।
- संग्रहण: बारिश का कुछ पानी नदियों और झीलों में बहकर वापस महासागरों में चला जाता है, और कुछ हिस्सा जमीन के अंदर रिसकर 'भूजल' बन जाता है ।

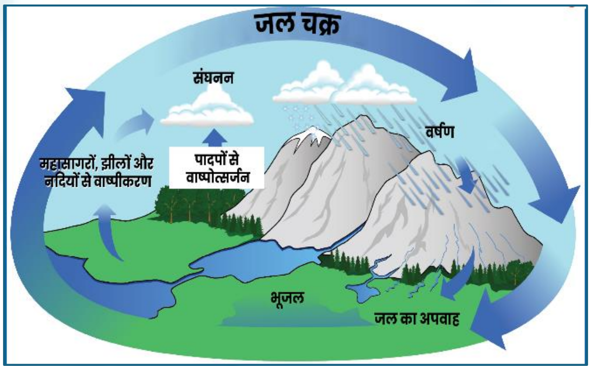

जल संसाधन:

जल संसाधन मुख्य रूप से निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित होते हैं :

- सतही जल: नदियों, झीलों, तालाबों और धाराओं में पाया जाने वाला जल ।
- भूजल: वर्षा का वह जल जो रिसकर चट्टानों के नीचे जमा हो जाता है, कुओं और नलकूपों द्वारा इसका उपयोग किया जाता है ।
- हिमनद: अलवणीय जल का एक बड़ा हिस्सा ऊंचे पहाड़ों और ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ के रूप में जमा है ।

जल उपयोग के प्रमुख क्षेत्र:

जल विभिन्न आवश्यक कार्यों में उपयोग किया जाता है :

- कृषि: भारत जैसे देशों में कुल उपलब्ध जल का सबसे बड़ा हिस्सा सिंचाई के लिए उपयोग होता है।
- घरेलू उपयोग: पीने, नहाने, सफाई और खाना पकाने में।
- उद्योग: निर्माण, कूलिंग और उत्पादन प्रक्रियाओं में।
- विद्युत उत्पादन: बहते जल का उपयोग करके जलविद्युत उत्पन्न की जाती है

जल संकट: एक गंभीर चुनौती

यद्यपि पृथ्वी का लगभग 71 प्रतिशत हिस्सा जल से ढका है, लेकिन इसमें से लगभग 97 प्रतिशत पानी समुद्र का खारा पानी है, जो पीने योग्य नहीं है। केवल 2.5 से 3 प्रतिशत पानी ही मीठा और शुद्ध है, जिसका अधिकांश भाग ग्लेशियरों (बर्फ) के रूप में जमा है।

आज बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण, वनों की कटाई और पानी की बर्बादी के कारण वैश्विक स्तर पर जल संकट गहराता जा रहा है । कई शहरों और गांवों में भूजल का स्तर खतरनाक रूप से नीचे गिर चुका है । पचास साल पहले, आम धारणा यह थी कि पानी एक अनंत संसाधन था । उस समय, धरती पर इंसानों की संख्या आज की संख्या के आधे से भी कम था । आज, जल संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा तीव्र है, जो "पीक पानी" की अवधारणा को जन्म देती है । इसका कारण यह है कि अब इस ग्रह पर सात अरब लोग हैं, जल, मांस और सब्जियों की खपत बढ़ रही है, और उद्योग, शहरीकरण और जैव-ईंधन फसलों से पानी की बढ़ती प्रतिस्पर्धा है । भविष्य में, भोजन का उत्पादन करने के लिए और भी ज्यादा पानी की आवश्यकता होगी क्योंकि पृथ्वी की आबादी 2050 तक 9 अरब तक पहुंचने का अनुमान है । वैश्विक जल संकट से बचने के लिए, किसानों को भोजन की बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए उत्पादकता बढ़ाने का प्रयास करना होगा और उद्योगों और शहरों को पानी अधिक कुशलता से उपयोग करने के तरीके खोजने होंगे ।

जल दुर्लभता के प्रकार:

❖ जल दुर्लभता को मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित किया गया है :

- भौतिक जल दुर्लभता: यह स्थिति प्राकृतिक कारणों (जैसे कम वर्षा या शुष्क जलवायु) से उत्पन्न होती है। इसमें सभी की मांगों को पूरा करने के लिए पारिस्थितिक तंत्र तक में पर्याप्त पानी उपलब्ध नहीं होता।
- आर्थिक जल दुर्लभता: यह जल के कुप्रबंधन या खराब बुनियादी ढांचे के कारण होती है। ऐसे क्षेत्रों में जल स्रोत तो मौजूद होते हैं, लेकिन तकनीक या धन की कमी के कारण पानी को लोगों तक पहुँचाना संभव नहीं हो पाता।

जल दुर्लभता के मुख्य कारण

- जनसंख्या विस्फोट: तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण पीने, नहाने और घरेलू उपयोग के लिए पानी की मांग बढ़ रही है।
- कृषि में अत्यधिक उपयोग: दुनिया के अधिकांश मीठे पानी का उपयोग (लगभग 70%) सिंचाई के लिए होता है । पारंपरिक तकनीकों से पानी की भारी बर्बादी होती है ।
- उद्योगों का विस्तार: औद्योगिक उत्पादन और बिजली संयंत्रों में भारी मात्रा में पानी की खपत होती है।
- जल प्रदूषण: घरेलू और औद्योगिक कचरे को सीधे जल स्रोतों (नदियों, झीलों) में बहाने से पीने योग्य पानी दूषित और अनुपयोगी हो जाता है।
- भूजल का दोहन: बारिश के पानी को सहेजने (रेनवाटर हार्वेस्टिंग) के बजाय लगातार बोरिंग और पंपों से पानी निकालने से भूजल स्तर खतरनाक रूप से गिर रहा है।
- वर्षा जल का असमान वितरण भी इसके मुख्य कारणों में से एक है ।

जल दुर्लभता के गंभीर प्रभाव

- स्वास्थ्य पर असर: दूषित पानी के उपयोग से डायरिया, हैजा और अन्य जानलेवा बीमारियां फैलती हैं।
- खाद्य संकट: सिंचाई के लिए पानी की कमी से फसलों के उत्पादन पर बुरा असर पड़ता है, जिससे खाद्य सुरक्षा खतरे में पड़ जाती है।
- पारिस्थितिकी तंत्र का विनाश: झीलों, नदियों और आर्द्रभूमि के सूखने से जलीय जीवों और जैव विविधता का भारी नुकसान होता है।

जल संरक्षण के उपाय

जल संरक्षण का अर्थ है पानी की बर्बादी को रोकना और इसके उपलब्ध स्रोतों का बुद्धिमानी से प्रबंधन करना ताकि आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ जल की उपलब्धता बनी रहे । बढ़ती जनसंख्या और जलवायु परिवर्तन के कारण जल संकट एक वैश्विक चुनौती है, जिसे जनभागीदारी और सरल आदतों से दूर किया जा सकता है । यदि हम आज जागरूक नहीं हुए, तो भविष्य अत्यंत संकटमय हो जाएगा । जल बचाने के लिए हमें तुरंत निम्नलिखित कदम उठाने होंगे:

- वर्षा जल संचयन: बारिश के पानी को छतों और गड्ढों के माध्यम से इकट्ठा करके जमीन के अंदर भेजना चाहिए।

- घरेलू स्तर पर बचत: ब्रश करते समय या बर्तन धोते समय नल को खुला न छोड़ें । नहाने के लिए फव्वारे के बजाय बाल्टी का उपयोग करें।
- पानी का पुनर्चक्रण: रसोई में सब्जियां और चावल धोने के बाद बचे पानी को फेंकने के बजाय पौधों में डालें।
- टपकते नलों की मरम्मत: घरों और सार्वजनिक स्थानों पर लीक हो रहे नलों और पाइपों की तुरंत मरम्मत करवाएं।
- ड्रिप सिंचाई: कृषि में पानी की बर्बादी रोकने के लिए आधुनिक सिंचाई पद्धतियों का उपयोग किया जाना चाहिए।
- बहुउद्देशीय परियोजनाएं: बांध बनाकर बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन एक साथ किया जाता है ।

जल जीवन मिशन

जल जीवन मिशन भारत सरकार की एक प्रमुख योजना है, जिसका उद्देश्य 2024 तक ग्रामीण भारत के सभी घरों में व्यक्तिगत नल कनेक्शन के माध्यम से सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल उपलब्ध कराना है । इस कार्यक्रम में जल स्रोतों की स्थिरता के लिए अनिवार्य उपाय भी लागू किए जाएंगे, जैसे कि अपशिष्ट जल प्रबंधन के माध्यम से पुनर्भरण और पुन: उपयोग, जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन । जल जीवन मिशन जल के प्रति सामुदायिक दृष्टिकोण पर आधारित होगा और इसमें व्यापक सूचना, शिक्षा और संचार को मिशन के एक प्रमुख घटक के रूप में शामिल किया जाएगा । जल जीवन मिशन जल के लिए एक जन आंदोलन खड़ा करना चाहता है, जिससे यह सभी की प्राथमिकता बन सके । इसे मूल रूप से 2019 में लॉन्च किया गया था और बाद में 'जल जीवन मिशन 2.0' को दिसंबर 2028 तक बढ़ा दिया गया । अब योजना का ध्यान केवल इन्फ्रास्ट्रक्चर (पाइपलाइन और टंकी) बनाने से हटकर निर्बाध और नियमित जल सेवा वितरण पर है । इसमें वर्षा जल संचयन, भूजल पुनर्भरण, और ग्रे-वाटर (अपशिष्ट जल) प्रबंधन जैसे स्रोत स्थिरता के उपाय भी शामिल हैं ।

जल प्रकृति द्वारा दिया गया एक अनमोल उपहार है, जिसे किसी भी कारखाने में बनाया नहीं जा सकता । "जल है तो कल है" की भावना को केवल नारों तक सीमित न रखकर हमें अपने दैनिक जीवन में उतारना होगा । पानी की एक-एक बूंद को बचाना हर नागरिक का परम कर्तव्य है, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियों को पानी के संकट से न जूझना पड़े ।

कार्य संस्कृति में परिवर्तन : आधुनिक कार्यालय की नई पहचान

राहुल कुमार राय
सहायक लेखा अधिकारी

आज का युग तीव्र परिवर्तन का युग है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैश्वीकरण ने न केवल हमारे जीवन-स्तर को बदला है, बल्कि हमारे कार्य करने के तरीके और सोच को भी पूरी तरह परिवर्तित कर दिया है। यदि हम कुछ दशक पीछे जाएँ, तो कार्यालय का स्वरूप बिल्कुल अलग दिखाई देता था - कागजी फाइलों का ढेर, सीमित संवाद, कठोर पदानुक्रम और पारंपरिक कार्यशैली। परंतु आज का आधुनिक कार्यालय इन सभी सीमाओं को पीछे छोड़ते हुए एक नई पहचान बना चुका है। इस नई पहचान का मूल आधार है -परिवर्तित कार्य संस्कृति।

कार्य संस्कृति से तात्पर्य उस वातावरण, व्यवहार, मूल्यों और कार्यशैली से है, जो किसी संगठन के भीतर कार्य करने की प्रक्रिया को निर्धारित करती है। यह केवल नियमों और प्रक्रियाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि कर्मचारियों के बीच आपसी सहयोग, नेतृत्व शैली, संवाद के तरीके, और कार्य के प्रति दृष्टिकोण को भी समाहित करती है। एक सकारात्मक और प्रगतिशील कार्य संस्कृति किसी भी संगठन की सफलता का आधार होती है। पारंपरिक कार्य संस्कृति में कार्य का केंद्र बिंदु केवल परिणाम होता था, जबकि आधुनिक कार्य संस्कृति में प्रक्रिया, नवाचार और कर्मचारी संतुष्टि को भी समान महत्व दिया जाता है। पहले जहाँ कठोर अनुशासन और आदेशात्मक नेतृत्व का बोलबाला था, वहीं आज सहभागिता और संवाद आधारित नेतृत्व को प्राथमिकता दी जाती है। आज के कार्यालयों में कर्मचारियों को केवल कार्य निष्पादन का साधन नहीं माना जाता, बल्कि उन्हें संगठन की महत्वपूर्ण संपत्ति के रूप में देखा जाता है। उनकी रचनात्मकता, विचारों और सुझावों को महत्व दिया जाता है, जिससे कार्य की गुणवत्ता और संगठन की उत्पादकता दोनों में वृद्धि होती है।

आधुनिक कार्य संस्कृति में प्रौद्योगिकी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल उपकरणों, क्लाउड सिस्टम, ई-ऑफिस, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और डेटा एनालिटिक्स जैसे साधनों ने कार्य को अधिक सरल, पारदर्शी और तेज बना दिया है। अब फाइलों के लिए लंबी कतारों और भौतिक उपस्थिति की आवश्यकता कम हो

गई है। कर्मचारी कहीं से भी, कभी भी कार्य कर सकते हैं। यह लचीलापन न केवल समय की बचत करता है, बल्कि कार्य-जीवन संतुलन को भी बेहतर बनाता है। आधुनिक कार्य संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पहलू है - कार्य और जीवन के बीच संतुलन। पहले जहाँ कर्मचारियों से लंबे समय तक काम करने की अपेक्षा की जाती थी, वहीं अब उनके मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को भी महत्व दिया जाता है।

लचीले कार्य समय, वर्क फ्रॉम होम, और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित पहलें कर्मचारियों के जीवन को संतुलित और संतुष्ट बनाने में सहायक हैं। इससे न केवल कर्मचारी खुश रहते हैं, बल्कि उनकी कार्यक्षमता और उत्पादकता भी बढ़ती है।

आधुनिक कार्यालयों में नेतृत्व की शैली भी बदल गई है। अब नेता केवल आदेश देने वाला नहीं, बल्कि मार्गदर्शक, प्रेरक और सहयोगी होता है। वह अपने टीम के सदस्यों को प्रोत्साहित करता है, उनके विचारों को सुनता है और उन्हें निर्णय प्रक्रिया में शामिल करता है। इस प्रकार की नेतृत्व शैली कर्मचारियों में विश्वास और आत्मविश्वास को बढ़ाती है, जिससे वे अपने कार्य को अधिक जिम्मेदारी और समर्पण के साथ करते हैं।

आज के कार्यालयों में विविधता और समावेशन को विशेष महत्व दिया जा रहा है। विभिन्न पृष्ठभूमि, संस्कृति, लिंग और अनुभव के लोग एक साथ कार्य करते हैं, जिससे नए विचार और दृष्टिकोण सामने आते हैं। समावेशी कार्य संस्कृति न केवल कर्मचारियों को समान अवसर प्रदान करती है, बल्कि संगठन को भी अधिक सशक्त और नवाचारी बनाती है।

हालांकि आधुनिक कार्य संस्कृति के अनेक लाभ हैं, लेकिन इसके साथ कुछ चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। जैसे—डिजिटल निर्भरता, कार्य का बढ़ता दबाव, व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन के बीच सीमाओं का धुंधलापन आदि।

इन चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक है कि संगठन स्पष्ट नीतियाँ बनाएँ, कर्मचारियों को उचित प्रशिक्षण दें, और एक स्वस्थ एवं संतुलित कार्य वातावरण सुनिश्चित करें।

सरकारी कार्यालयों में भी कार्य संस्कृति में परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। ई-ऑफिस प्रणाली, पारदर्शिता, जवाबदेही और समयबद्ध कार्य निष्पादन पर जोर दिया जा रहा है। इससे न केवल कार्य

की गति बढ़ी है, बल्कि जनता के प्रति सेवाओं की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है। यह परिवर्तन एक आधुनिक और उत्तरदायी प्रशासन की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि कार्य संस्कृति में परिवर्तन केवल एक आवश्यकता नहीं, बल्कि समय की मांग है। आधुनिक कार्यालय की नई पहचान इसी परिवर्तन पर आधारित है, जहाँ नवाचार, सहयोग, संतुलन और मानव मूल्यों को प्रमुखता दी जाती है।

यदि हम इस नई कार्य संस्कृति को अपनाते हैं, तो न केवल संगठन की सफलता सुनिश्चित होगी, बल्कि प्रत्येक कर्मचारी का व्यक्तिगत और पेशेवर विकास भी संभव होगा। यही एक सशक्त, प्रगतिशील और प्रेरणादायक कार्यस्थल की पहचान है।

अमीर खुसरो और उनकी पहली हिंदी कविता

निधिलक्ष्मी
वरिष्ठ अनुवादक

हिंदी भाषा का विकास भारतीय उप महाद्वीप की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक प्रक्रियाओं का परिणाम है । इसके उद्भव को लेकर विद्वानों में विभिन्न मत रहे हैं, लेकिन यह निर्विवाद है कि हिंदी का विकास प्राचीन अपभ्रंश और मध्यकालीन लोक भाषाओं से हुआ । इस संदर्भ में अमीर खुसरो (1253-1325) का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्हें हिंदी भाषा और साहित्य में एक प्रारंभिक प्रवर्तक माना जाता है ।

अमीर खुसरो, जिनका पूरा नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन खुसरो था, तुर्क-मंगोल मूल के एक महान सूफी कवि, संगीतज्ञ और बहुभाषाविद थे । वे दिल्ली सल्तनत के कई शासकों, विशेष रूप से बलबन, जलालुद्दीन खिलजी, अलाउद्दीन खिलजी और गयासुद्दीन तुगलक के दरबार में महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे । उनका साहित्यिक योगदान मुख्य रूप से फारसी भाषा में है, लेकिन उन्होंने हिंदी या उसकी तत्कालीन रूपरेखा 'हिंदवी' में भी महत्वपूर्ण कार्य किए, जिससे हिंदी के प्रारंभिक स्वरूप को बल मिला ।

हिंदी की पहली कविता कौन-सी थी, यह एक जटिल विषय है क्योंकि हिंदी स्वयं एक क्रमिक विकास की प्रक्रिया में रही है । हिंदी साहित्य के प्रारंभिक स्वरूप में विभिन्न बोलियों का योगदान रहा, जिसमें अपभ्रंश, ब्रजभाषा, अवधी, और खड़ीबोली प्रमुख थीं ।

अमीर खुसरो को खड़ीबोली हिंदी का प्रथम कवि माना जाता है, लेकिन यह कहना कि हिंदी की "पहली कविता" उन्होंने लिखी, ऐतिहासिक रूप से पूर्ण सत्य नहीं हो सकता । उनसे पूर्व अपभ्रंश और अवहट्ट में भी काव्य रचनाएँ हो चुकी थीं । उदाहरण के लिए, सरहपा और सिद्धों की रचनाएँ हिंदी के पूर्ववर्ती रूपों में मिलती हैं । परंतु, अमीर खुसरो ने हिंदी या हिंदवी को एक सशक्त साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करने में जो योगदान दिया, वह अद्वितीय है ।

उनकी कई रचनाएँ हिंदी के आरंभिक स्वरूप में मिलती हैं, जिनमें लोकगीत, पहेलियाँ, मुकरियाँ और दोहे प्रमुख हैं । एक प्रसिद्ध दोहा इस प्रकार है:

"ख़ुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वाकी धार।
जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।"

यह दोहा सूफी प्रेम और रहस्यवाद को व्यक्त करता है, जो हिंदी साहित्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति बन गई ।

अमीर खुसरो के जीवन में हिंदी का प्रयोग

अमीर खुसरो का हिंदी प्रेम उनके बहुभाषी व्यक्तित्व का प्रतीक था। वे फारसी, अरबी, तुर्की और हिंदी (हिंदवी) सहित कई भाषाओं में निपुण थे । उनके द्वारा हिंदी या हिंदवी के प्रयोग को कई स्तरों पर समझा जा सकता है:

सामाजिक और सांस्कृतिक स्तर पर:

अमीर खुसरो दरबारी कवि होने के साथ-साथ लोकधारा से जुड़े हुए थे । वे जनसामान्य की भाषा में कविताएँ लिखते थे, जिससे उनकी लोकप्रियता बढ़ी। उन्होंने अपनी कविताओं में हिंदी के शब्दों और लोक धुनों का समावेश किया, जिससे हिंदी भाषा की स्वीकृति और प्रचलन बढ़ा ।

1. **संगीत और कविता के समन्वय में**:

   अमीर खुसरो ने कई नए संगीत रूपों की रचना की, जिनमें 'ख्याल' और 'तराना' प्रमुख हैं। उनके गीत हिंदी भाषा में होते थे, जिनका असर आगे चलकर हिंदी कविता पर भी पड़ा। उदाहरण के लिए, उनके प्रसिद्ध गीतों में से एक है: *"छाप तिलक सब छीनी रे मोसे नैना मिलाइके।"* यह रचना हिंदी-फारसी मिश्रित भाषा में है, जिसे 'रेख्ता' कहा जाता था। यह आगे चलकर उर्दू भाषा के विकास का आधार बना।

2. **पहेलियों और मुकरियों के माध्यम से हिंदी का प्रचार**:

अमीर खुसरो की पहेलियाँ और मुकरियाँ हिंदी भाषा की जीवंतता का प्रमाण हैं। उनकी कुछ प्रसिद्ध पहेलियाँ इस प्रकार हैं:

- *"एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।"*

(उत्तर: आकाश और तारे)

- *"काली गाय, सफेद दूध, जो दूहे वह पछताए।"*

(उत्तर: आँख और आँसू)

इन पहेलियों से स्पष्ट होता है कि खुसरो हिंदी भाषा के विविध प्रयोगों से परिचित थे और उन्होंने इसे लोकभाषा के स्तर पर सशक्त बनाने का प्रयास किया।

अमीर खुसरो और हिंदी साहित्य का प्रभाव

अमीर खुसरो के हिंदी भाषा में योगदान ने आगे चलकर संत कबीर, सूरदास और तुलसीदास जैसे कवियों के लिए मार्ग प्रशस्त किया । उन्होंने हिंदी को साहित्यिक स्वरूप देने में अहम भूमिका निभाई। हिंदी के भक्ति और सूफी साहित्य में उनका योगदान निम्नलिखित बिंदुओं में देखा जा सकता है:

1. **हिंदी और फारसी का समन्वय**:

खुसरो की भाषा में हिंदी और फारसी का सुंदर मिश्रण मिलता है। यह प्रवृत्ति आगे चलकर उर्दू भाषा के विकास का कारण बनी।

2. **खड़ी बोली हिंदी की नींव**:

खुसरो ने जिस भाषा का उपयोग किया, वह आधुनिक हिंदी के निकट थी। उनकी भाषा ब्रजभाषा और अवधी से अलग थी, जो बाद में खड़ी बोली के रूप में विकसित हुई।

3. **लोक साहित्य को मान्यता**:

उन्होंने लोकधुनों और हिंदी भाषा को साहित्यिक दरबार तक पहुँचाया, जिससे हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ी ।

अमीर खुसरो हिंदी साहित्य के पहले संगठित कवियों में से एक थे, लेकिन यह कहना कि हिंदी की पहली कविता उन्होंने ही लिखी थी, ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सिद्ध नहीं होता । फिर भी, उनका योगदान हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में अमूल्य था। उनकी रचनाओं में हिंदी का व्यापक प्रयोग देखने को मिलता है, जिससे हिंदी साहित्य को एक नई दिशा मिली ।

अमीर खुसरो के हिंदी प्रेम और साहित्यिक योगदान ने हिंदी को एक परिपक्व भाषा के रूप में उभरने में सहायता की। उन्होंने इसे आम जनमानस की भाषा बनाने का कार्य किया, जिससे हिंदी आगे चलकर भारतीय उपमहाद्वीप की प्रमुख भाषाओं में स्थान पा सकी। उनका साहित्य और संगीत आज भी भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं, जो हिंदी भाषा के प्रारंभिक विकास में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका को प्रमाणित करता है।

ख़ुसरो बाजी प्रेम की, मैं
खेलूँ पी के संग,।

जीत गई तो पिया मोरे, हारी
तो पिया के संग।

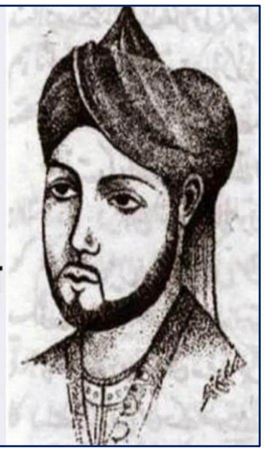

हार्दिक अभिनंदन

*केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, बेंगलूरु द्वारा दिनांक 05.05.2025 से 16.06.2025 तक आयोजित प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के अंत में आयोजित परीक्षा में **प्रथम स्थान** प्राप्त करने के उपलक्ष्य में **स्वर्ण पदक** से सम्मानित*
***श्री अंकित पाल, कनिष्ठ अनुवादक**, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल कार्यालय, तिरुवनंतपुरम*

गणतंत्र दिवस समारोह 2026 की झलकियाँ

‘ओणम’ की झलकियाँ

केरल में फुटबॉल का जुनून

जिनु अब्राहम
सहायक पर्यवेक्षक

भारत के दक्षिण-पश्चिमी तट पर स्थित केरल अपनी प्राकृतिक सुंदरता, संस्कृति, शिक्षा और सामाजिक प्रगति के लिए प्रसिद्ध है। लेकिन इन सबके अलावा एक और चीज है जो केरल के लोगों की पहचान बन चुकी है, और वह है फुटबॉल के प्रति उनका असीम प्रेम । यदि फुटबॉल को भारत में किसी राज्य का सबसे लोकप्रिय खेल कहा जाए, तो केरल का नाम सबसे पहले लिया जाएगा । यहाँ फुटबॉल केवल एक खेल नहीं, बल्कि लोगों की भावना, संस्कृति और जीवनशैली का अभिन्न अंग बन चुका है।

केरल में फुटबॉल का इतिहास बहुत पुराना है। ब्रिटिश शासन के समय जब अंग्रेज व्यापारी और सैनिक मालाबार तट पर आए, तब वे अपने साथ फुटबॉल भी लेकर आए । धीरे-धीरे यह खेल स्थानीय लोगों के बीच लोकप्रिय होने लगा । विशेष रूप से मलप्पुरम, कोषिकोड, कण्णूर और कोच्चि जैसे क्षेत्रों में फुटबॉल ने गहरी जड़ें जमा लीं । समय के साथ यह खेल गांवों और शहरों के हर वर्ग के लोगों का प्रिय बन गया।

केरल में फुटबॉल का सबसे बड़ा आकर्षण यह है कि यहाँ के लोग इसे एक त्योहार की तरह मनाते हैं । विश्व कप या यूरो कप जैसे अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के दौरान पूरा राज्य उत्साह से भर जाता है । जगह-जगह अर्जेंटीना, ब्राजील, पुर्तगाल, जर्मनी और फ्रांस जैसी टीमों के विशाल कटआउट लगाए जाते हैं । गांवों की गलियों, घरों और दुकानों पर विभिन्न देशों के झंडे दिखाई देते हैं । मैच के दिनों में लोग देर रात तक जागकर अपने पसंदीदा खिलाड़ियों और टीमों का समर्थन करते हैं । ऐसा वातावरण भारत के अन्य राज्यों में बहुत कम देखने को मिलता है ।

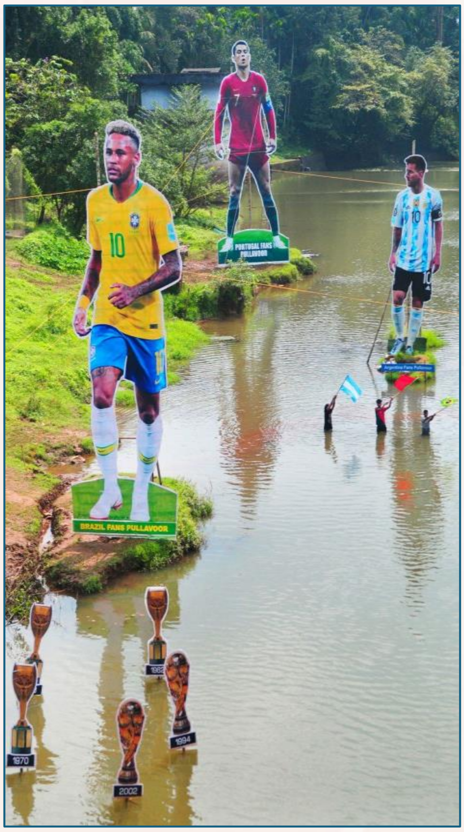

केरल में अर्जेंटीना और ब्राजील की लोकप्रियता विशेष रूप से उल्लेखनीय है । लियोनेल मेसी और नेमार जैसे खिलाड़ियों के लाखों प्रशंसक यहाँ मौजूद हैं। विश्व कप के दौरान समर्थकों के बीच स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और उत्साह देखने योग्य होता है । कई स्थानों पर प्रशंसक समूह सामूहिक रूप से मैच देखने की व्यवस्था करते हैं और जीत का जश्न आतिशबाजी तथा जुलूस निकालकर मनाते हैं ।

फुटबॉल के प्रति इस प्रेम का सबसे बड़ा उदाहरण मलप्पुरम जिला है, जिसे "भारतीय फुटबॉल की राजधानी" भी कहा जाता है । यहाँ के गांवों में छोटे-छोटे मैदानों पर बच्चे सुबह और शाम फुटबॉल खेलते दिखाई देते हैं । बारिश हो या गर्मी, खेल के प्रति उनका उत्साह कभी कम नहीं होता । स्थानीय टूर्नामेंटों में हजारों दर्शक उपस्थित होते हैं और खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हैं । कई बार इन प्रतियोगिताओं में मिलने वाली दर्शकों की संख्या राष्ट्रीय स्तर के मैचों से भी अधिक होती है।

केरल ने भारतीय फुटबॉल को अनेक प्रतिभाशाली खिलाड़ी दिए हैं । आई एम विजयन, जो भारत के सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ियों में गिने जाते हैं, केरल से ही हैं । उनके अलावा जोपॉल अंचेरी, सी के विनीत, सहल अब्दुल समद और राहुल के पी जैसे खिलाड़ियों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है । इन खिलाड़ियों की सफलता ने राज्य के युवाओं को फुटबॉल के प्रति और अधिक प्रेरित किया है ।

केरल में फुटबॉल के विकास में विद्यालयों और महाविद्यालयों का भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है । विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में फुटबॉल प्रतियोगिताओं का नियमित आयोजन किया जाता है । कई स्कूलों में विशेष प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की गई है । राज्य सरकार और खेल संगठनों द्वारा प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही हैं । इसके परिणामस्वरूप बड़ी संख्या में युवा खिलाड़ी इस खेल को अपना करियर बनाने का प्रयास कर रहे हैं ।

भारतीय सुपर लीग (आईएसएल) में भाग लेने वाली केरल ब्लास्टर्स फुटबॉल क्लब ने भी फुटबॉल के प्रति लोगों के उत्साह को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है। कोच्चि स्थित इस क्लब के समर्थकों को "मंजप्पड़ा" के नाम से जाना जाता है । स्टेडियम में हजारों समर्थक पीली जर्सी पहनकर अपनी टीम का उत्साह बढ़ाते हैं। केरल ब्लास्टर्स के मैचों के दौरान स्टेडियम का माहौल किसी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता से कम नहीं होता । यही कारण है कि इस क्लब के प्रशंसकों को भारत के सबसे समर्पित और ऊर्जावान समर्थकों में गिना जाता है ।

फुटबॉल के प्रति यह प्रेम केवल युवाओं तक सीमित नहीं है। बच्चे, महिलाएँ, बुजुर्ग और कामकाजी लोग - सभी इस खेल में समान रूप से रुचि रखते हैं । शाम के समय समुद्र तटों, मैदानों और खुली जगहों पर लोग फुटबॉल खेलते दिखाई देते हैं । यह खेल लोगों को शारीरिक रूप से स्वस्थ रखने के साथ-साथ आपसी भाईचारे और सामाजिक एकता को भी मजबूत करता है ।

हालाँकि फुटबॉल के क्षेत्र में केरल ने उल्लेखनीय प्रगति की है, फिर भी आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं, अधिक स्टेडियम और अंतरराष्ट्रीय स्तर की अकादमियों की आवश्यकता है। यदि सरकार, खेल संस्थाएँ और निजी क्षेत्र मिलकर इस दिशा में प्रयास करें, तो केरल भविष्य में भारत को विश्व स्तरीय फुटबॉल खिलाड़ी प्रदान कर सकता है ।

निष्कर्षतः, केरल में फुटबॉल केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि लोगों की भावनाओं, संस्कृति और पहचान का हिस्सा बन चुका है । यहाँ का हर मैदान, हर गली और हर फुटबॉल प्रेमी इस खेल के प्रति अपनी गहरी निष्ठा को दर्शाता है। यही कारण है कि केरल को भारत में फुटबॉल का गढ़ कहा जाता है। आने वाले वर्षों में भी यह जुनून नई पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा और भारतीय फुटबॉल को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा ।

राजस्थान – दुर्गों की भूमि

रेणुका जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

राजस्थान वीरों की भूमि है । राजस्थान के वीर केसरिया बाना पहन कर अपने देश की रक्षा के लिए युद्ध में उतरते थे । उन्हीं वीरों ने राजस्थान में अनेक किलों, दुर्गों और गढ़ों का निर्माण भी किया । राजस्थान को मरुभूमि भी कहते हैं और मरुभूमि अपने इतिहास, वीरगाथाओं और किलों के लिए प्रसिद्ध है । राजस्थान के पहाड़ी और पर्वतीय क्षेत्रों में 100 से अधिक किले हैं । राजस्थान के महाराणा कुंभा, जो कुंभलगढ़ के शासक थे, केवल उन्होंने ही राजस्थान में 32 दुर्गों का निर्माण करवाया था । राजस्थान का प्रत्येक दुर्ग अपनी अनोखी कहानी कहता है तथा वहां की दीवारें अपने वीरों की वीर गाथाएं गाती हैं ।

इन दुर्गों में से अनेक दुर्ग पहाड़ी दुर्ग हैं । चाणक्य ने अर्थशास्त्र में चार प्रकार के दुर्गों का उल्लेख किया है –

1. औदक (जल) दुर्ग - जो चारों तरफ से पानी से घिरे होते हैं ।
2. पार्वत (गिरि) दुर्ग - जो बड़ी चट्टानों या पर्वतों पर बने होते हैं ।
3. धान्वन (मरु) दुर्ग - जो पानी और वनस्पति विहीन, मरुस्थल (रेगिस्तान) पर बने होते हैं ।
4. वन दुर्ग - जो चारों तरफ से दलदल और कांटेदार झाड़ियों से सुरक्षित होते हैं ।

राजस्थान में स्थित छह ऐतिहासिक किलों का एक समूह हैं । इन्हें एक श्रृंखला के रूप में वर्गीकृत किया गया है और 2013 में यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित किया गया है । पहाड़ी किलों की इस श्रृंखला में चित्तौड़गढ़ में चित्तौड़ किला, राजसमंद में कुंभलगढ़ किला, सवाई माधोपुर में रणथंबोर किला, झालावाड़ में गागरोन किला, जयपुर में आमेर किला और जैसलमेर में जैसलमेर किला शामिल हैं ।

राजस्थान में पहाड़ियों और पर्वतीय क्षेत्रों पर सौ से अधिक किले हैं । "राजस्थान के पहाड़ी किले" को शुरू में यूनेस्को को अरावली पर्वतमाला में स्थित पांच राजपूत किलों की एक क्रमबद्ध धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया गया था , जिनका निर्माण और संवर्धन 5वीं से 18वीं शताब्दी ईस्वी के बीच विभिन्न राज्यों के कई राजपूत राजाओं द्वारा किया गया था । जोधपुर स्थित मेहरानगढ़ किला एक पहाड़ी किला है, लेकिन इसे यूनेस्को द्वारा धरोहर स्थल के रूप में मान्यता नहीं दी गई है । इनमें से कुछ किलों में 20 किलोमीटर तक

लंबी रक्षात्मक किलेबंदी की दीवारें हैं, जिनमें आज भी शहरी केंद्र मौजूद हैं और जल संचयन तंत्र अभी भी उपयोग में है ।

राजस्थान के प्रमुख किले निम्नलिखित हैं, जिन्हें यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल किया गया है-

- **चित्तौड़गढ़ दुर्ग:** राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में स्थित चित्तौड़ दुर्ग भारत का सबसे बड़ा दुर्ग है । इसका निर्माण मोरिय शासक चित्रांगद मोरी ने करवाया था । यह किला मेवाड़ की राजधानी हुआ करता था । यह बेराच नदी द्वारा सिंचित घाटी के मैदानों से ऊपर 280 हेक्टेयर (691.9 एकड़) क्षेत्र में फैले 180 मीटर (590.6 फीट) ऊँची पहाड़ी पर स्थित है । चित्तौड़ का किला वह किला है, जिसमें सबसे अधिक साके (पुरुष केसरिया बाना पहन कर युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए तथा महिलाओं ने जौहर किया) हुए हैं । इस किले में कुल तीन (कुछ इतिहासकारों के अनुसार साढ़े तीन) साके हुए हैं । लोकप्रिय रानी पद्मिनी ने भी हजारों महिलाओं के साथ इसी किले में जौहर किया था । चित्तौड़गढ़ का पहला साका सन् 1303 में हुआ जब अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण किया तथा चित्तौड़ के राणा रतनसिंह ने केसरिया धारण किया और रानी पद्मिनी के नेतृत्व में हजारों महिलाओं ने अपने आत्मसम्मान की रक्षा हेतु जौहर किया । दूसरा साका सन् 1535 ईस्वी में बहादुरशाह के आक्रमण के दौरान हुआ जब राणा सांगा (संग्रामसिंह) ने केसरिया धारण किया और रानी कर्णावती ने जौहर किया तथा तीसरा साका 1568 ईस्वी में अकबर के आक्रमण के समय हुआ जब जयमल और फत्ता सिसोदिया ने केसरिया धारण किया और फत्ता की पत्नी फूलकंवर के नेतृत्व में चित्तौड़ की रानियों और वीरांगनाओं ने जौहर किया ।

- **कुंभलगढ़ किला**: कुंभलगढ़ किला, जिसे **भारत की महान दीवार** के नाम से भी जाना जाता है, अरावली पहाड़ियों की पश्चिमी श्रृंखला पर स्थित मेवाड़ का एक किला है, जो 36 किलोमीटर में फैला हुआ है । यह किला विश्व के सबसे बड़े किला परिसरों में से एक है । साक्ष्यों के अभाव के कारण किले के प्रारंभिक इतिहास का पता नहीं लगाया जा सका है । इसका निर्माण 15वीं शताब्दी में महाराणा कुंभा ने करवाया था । राणा कुंभा द्वारा नए किले के निर्माण से पहले, एक छोटा किला था, जो एक छोटे पहाड़ी क्षेत्र तक सीमित था, जिसके बारे में माना जाता है कि इसका निर्माण मौर्य वंश के राजा सम्प्रति ने करवाया था और इसे मत्स्येंद्र दुर्ग के नाम से जाना जाता था । महाराणा कुंभा ने उस युग के प्रसिद्ध वास्तुकार "मंदन" की सहायता ली थी । उनके राज्य में स्थित 84 किलों में से, राणा कुंभा ने 32 किलों का निर्माण करवाया था, जिनमें से कुंभलगढ़ सबसे बड़ा और सबसे भव्य है । किले के भीतर अनेक जैन और हिंदू मंदिर स्थित हैं । कुंभलगढ़ किले में भी 15वीं शताब्दी में दो साके हुए हैं ।

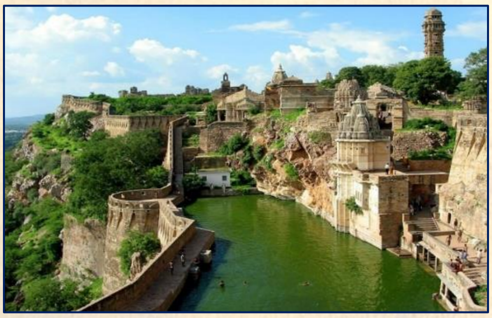

➢ **आमेर का किला**: आमेर/अंबर किला आमेर में स्थित एक किला है । एक पहाड़ी पर ऊँचाई पर स्थित, यह जयपुर का प्रमुख पर्यटक आकर्षण है । आमेर किला अपनी कलात्मक शैली के लिए जाना जाता है । अपनी विशाल प्राचीरों, द्वारों की श्रृंखला और पत्थर के रास्तों के साथ, यह किला माओटा झील को देखता है, जो आमेर

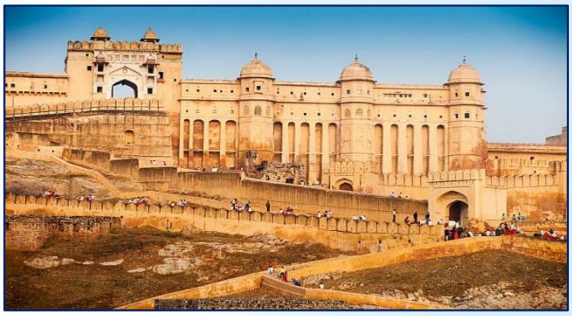

महल के लिए पानी का मुख्य स्रोत है । आमेर एक मीना राज्य था, जिस पर सुसावत वंश का शासन था । उन्हें हराने के बाद, दुलहेराय के पुत्र काकिल देव ने खोह के बाद आमेर को ढूंढ़ाड़ की राजधानी बनाया । आमेर किले का निर्माण मूल रूप से राजा मान सिंह ने करवाया था । जय सिंह प्रथम ने इसका विस्तार किया । अगले 150 वर्षों में क्रमिक शासकों द्वारा इसमें सुधार और परिवर्धन किए गए, जब तक कि 1727 में सवाई जय सिंह द्वितीय के समय में कछवाहों ने अपनी राजधानी जयपुर स्थानांतरित नहीं कर दी । इस किले में एक भी साका नहीं हुआ क्योंकि यहां के राजाओं नें अपनी कूटनीति का परिचय देते हुए मुगल शासकों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए । आमेर के सवाई मानसिंह अकबर के अत्यधिक विश्वसनीय तथा उच्च मनसबदार थे । वर्तमान में आमेर के राजा सवाई पद्मनाभ सिंह हैं ।

➢ **रणथंभौर किला**: यह किला, रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान क्षेत्र के अंदर है। किले के तीन तरफ पहाड़ों की प्राकृतिक खाई बनी हुई है, जो इसे मजबूत और अजेय बनाती है। इसका निर्माण चौहान राजा 'रणथंबन देव' द्वारा 944 ई. में किया गया था । खानवा युद्ध में घायल राणा सांगा को भी इलाज के लिए इसी दुर्ग में

लाया गया था । रणथम्भौर का यह उल्लेखनीय किला चौहान शासकों द्वारा दसवीं-ग्यारहवीं शताब्दी में बनाया गया था । एक आदर्श सामरिक स्थान होने के कारण यह दुश्मन को खाड़ी में रोके रखने के लिए उपयुक्त था । अलाउद्दीन खिलजी ने 1303 ई. में इस किले की घेराबन्दी की थी । तब ये किला राजघराने की महिलाओं के 'जौहर' की ऐतिहासिक घटना का साक्षी बना। जिसमें राजा हम्मीरदेव चौहान ने केसरिया धारण कर वीरगति प्राप्त की तथा उनकी रानी रंगादेवी के नेतृत्व में वीरांगनाओं ने जौहर किया । किले की विशेषता इसे मंदिर, जलाशय, विशाल द्वार और सुदृढ़ प्राचीरों में दिखाई पड़ती है ।

➢ **जैसलमेर किला**: जैसलमेर किला जैसलमेर शहर में स्थित है । इसे दुनिया के कुछ गिने-चुने "जीवंत किलों" में से एक माना जाता है (जैसे कि फ्रांस का कारकासोन), क्योंकि पुराने शहर की लगभग एक चौथाई आबादी अभी भी किले के भीतर रहती है । यह राजस्थान का दूसरा सबसे पुराना किला है, जिसका निर्माण

1156 ईस्वी में राजपूतों द्वारा किया गया था । किंवदंती के अनुसार, इस किले का निर्माण भाटी राजपूत रावल जैसल ने 1156 ईस्वी में करवाया था । कहानी के अनुसार, इसने लोध्रुवा में पहले से बने एक किले का स्थान लिया , जिससे जैसल संतुष्ट नहीं थे और इस प्रकार, जैसल द्वारा जैसलमेर शहर की स्थापना के साथ एक नई राजधानी स्थापित की गई । यह किला एक वर्ल्ड हैरिटेज साइट है । थार मरुस्थल के 'त्रिकुटा पर्वत' पर खड़ा यह किला बहुत सी ऐतिहासिक लड़ाईयाँ देख चुका है । सूरज की रोशनी जब इस किले पर पड़ती है तो यह पीले बलुआ पत्थर से बना होने के कारण, सोने जैसा चमकता है । इसीलिए इसे 'सोनार क़िला' या 'गोल्डन फोर्ट' कहते हैं । अस्तांचल में जाता सूर्य भी अपने उजास से किले को रहस्यपूर्ण बना देता है । बेजोड़ शैली में निर्मित यह किला स्थानीय कारीगरों द्वारा शाही परिवार के लिए बनाया गया था । सोनार किला एक विश्व धरोहर स्थल है। महान फिल्मकार सत्यजीत रे की प्रसिद्ध फिल्म 'फेलुदा' में सोनार क़िला (द गोल्डन फोर्ट) का विशेष उल्लेख है । जैसलमेर दुर्ग में कुल ढ़ाई साके हुए । पहला साका 1299-1313 ई. के बीच अलाउद्दीन खिलजी के आक्रमण के समय हुआ, जब तक भाटी शासक महारावल मूलराज ने केसरिया धारण किया । दूसरा साका 1352 ई, में फिरोजशाह तुगलक के आक्रमण के दौरान हुआ जब रावल दूदा के नेतृत्व में राजपूत वीरों ने केसरिया धारण किया तथा तीसरा अर्ध साका 1550 ई. में महारावल लूणकरण के शासनकाल में अमीर अली के आक्रमण के दौरान हुआ जब वीरों ने तो केसरिया धारण किया परन्तु वीरांगनाएं जौहर नहीं कर पाई ।

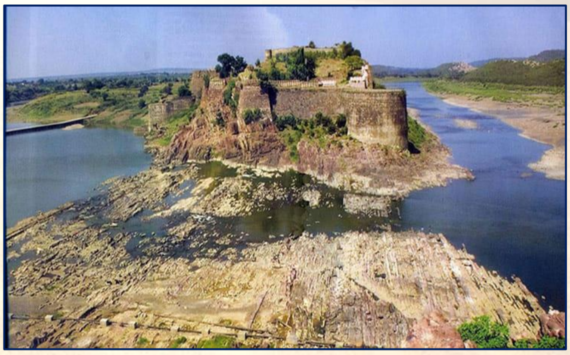

- **गागरोन का किला**: गागरोन किला झालावाड़ जिले में स्थित एक पहाड़ी किला है । यह पहाड़ी और जल किले का एक उदाहरण है । इस किले का निर्माण बारहवीं शताब्दी में राजपूत राजा बिजलदेव सिंह डोड ने करवाया था । किला तीन तरफ से पानी से घिरा है और चौथी तरफ खाई है , इसलिए इसे "जलदुर्ग" नाम दिया गया है । कहा जाता है कि इस किले में 14 युद्ध और रानियों के 2 जौहर हुए हैं । इतिहास बताता है कि इस किले में हजारों महिलाओं ने दुश्मनों से अपनी लाज बचाने के लिए जौहर कर लिया था । यहाँ के शासक 'अचलदास खींची' जब मालवा के शासक होशंग शाह से हार गए थे तो यहाँ की राजपूत महिलाओं ने खुद को दुश्मनों से बचाने के लिए स्वयं को ज़िन्दा, अग्नि के हवाले कर दिया था । 'यूनेस्को' की विश्व धरोहर स्थल सूची में सम्मिलित छह पहाड़ी किलों में से एक, पहाड़ी और जल दुर्ग का प्रतीक गागरोन किला राजस्थान की शान है । आहू और काली सिंध नामक नदियों से घिरे इस किले की भव्य सुंदरता को अपलक निहारने का मन करता है । किले के बाहर 'सूफी संत मिट्ठेशाह' के मकबरे पर मोहर्रम के महीने में वार्षिक मेले का आयोजन होता है। इस किले में कुल दो साके हुए हैं ।

प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के प्रधान कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों में हिंदी सप्ताह/पखवाड़ा समारोह 2025 के आयोजन की रिपोर्ट

प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II), केरल के प्रधान कार्यालयों में दिनांक 14.09.2025 से 06.10.2025 तक हिंदी पखवाड़ा समारोह मनाया गया।

हिंदी दिवस का पालन एवं राजभाषा प्रतिज्ञा

14 सिंतबर को बंद छुट्टी होने के कारण 15 सितंबर को हिंदी दिवस का पालन करते हुए अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई।

प्रतियोगिताएँ

अधिकारियों/कर्मचारियों के लिए 17.09.2025 से 24.09.2025 तक निम्नलिखित प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

1.	निबंध लेखन	9.	कविता रचना
2.	टिप्पण एवं आलेखन	10.	कविता पाठ
3.	सुलेखन	11.	आशुभाषण
4.	अंग्रेजी से हिंदी में और विलोमतः अनुवाद	12.	हिंदी गीत-एकल-महिला
5.	प्रशासनिक हिंदी	13.	हिंदी गीत एकल-पुरुष
6.	वर्णानुक्रम	14.	देशभक्ति गीत (समूह)
7.	हस्तलेखन	15.	अंताक्षरी
8.	कथा रचना	16.	प्रश्नोत्तरी

राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम

23.09.2025 (मंगलवार) को पूर्वाह्न 10.30 बजे से अपराह्न 12.30 बजे तक अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री षोजो लोबो, सहायक प्रबंधक (राजभाषा), कैनरा बैंक, तिरुवनंतपुरम द्वारा इस कार्यक्रम में व्याख्यान दिया गया।

समापन सम्मेलन

हिंदी पखवाड़ा 2025 का समापन सम्मेलन दिनांक 06.10.2025 को आयोजित किया गया। **श्री बाषा मोहम्मद बी, उप महालेखाकार** द्वारा सभा में उपस्थित सज्जनों का स्वागत किया गया। **सुश्री अतूर्वा सिन्हा, महालेखाकार (ले व ह)** ने अपने अध्यक्षीय भाषण में भारत जैसे बहु भाषा-भाषी देश में हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय भाषाएं भी सीखने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया। **सुश्री प्रीति अब्रहाम, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I)** ने केंद्र सरकारी कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी में काम करने के सांवैधानिक दायित्व की ओर ध्यान दिलाया। **श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II)** भी इस अवसर पर उपस्थित थे। महालेखाकारों द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाणपत्र वितरित किए गए। तदुपरांत, कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा कविता पाठ, हिंदी गीत एवं देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए गए। **डॉ डी अनीष, वरिष्ठ उप महालेखाकार** ने हिंदी पखवाड़ा समारोह के आयोजन में सहयोग प्रदान करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार प्रकट किया। राष्ट्रगान के साथ समारोह संपन्न हुआ।

मंचासीन – सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार; सुश्री अतूर्वा सिन्हा, प्रधान महालेखाकार एवं श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार

सभा का स्वागत करते हुए
श्री बाषा मोहम्मद बी, उप महालेखाकार

हिंदी दिवस 2025 के अवसर पर भारत के आदरणीय गृह मंत्री जी के सदेश की वीडियो प्रस्तुति

अध्यक्षीय भाषण – सुश्री अतूर्वा सिन्हा, प्रधान महालेखाकार

आशीर्वचन – सुश्री प्रीति अब्राहम, महालेखाकार

श्री विष्णुकांत पी बी, महालेखाकार से वर्ष 2024-25 के दौरान मूल रूप से हिंदी में काम करने हेतु प्रोत्साहन योजना के तहत प्रथम पुरस्कार का प्रमाण-पत्र ग्रहण करती हुई सुश्री मीनाक्षी प्रसाद, सहायक लेखा अधिकारी

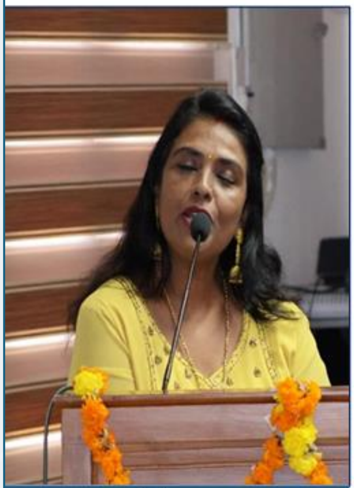

कविता पाठ:
सुश्री श्रीजु कुमारजी

गीत प्रस्तुति:
श्री आनंद पी सी

देशभक्ति गीत प्रस्तुति

कृतज्ञता ज्ञापन:
डॉ अनीष डी, वरिष्ठ उप महालेखाकार

पुरस्कार वितरण

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025 के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता				
क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता अधिकारीकर्मचारी/ का नाम (श्रीमती/श्री)		
		प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	निबंध लेखन	**विजय कुमार** सहायक ले. प. अधिकारी	**रमेश दुगारिया** लेखापरीक्षक	**आरती राघव** लेखाकार
2.	टिप्पण एवं आलेखन	**लोकेश कुमार मीणा** सहायक लेखा अधिकारी	**सचिन** सहायक ले. प.अधिकारी	**संतोष मीना** सहायक लेखा अधिकारी
3.	सुलेखन	**वीरेन्द्र कुमार** सहायक लेखा अधिकारी	**जे ए साई कुमार** वरिष्ठ लेखापरीक्षक	**अविनाश नाथ** लेखापरीक्षक
4.	अनुवाद	**प्रतीक्षा भूषण** लेखापरीक्षक	**नीतीश कुमार** लेखाकार	**बबलू कुमार पारित** सहायक लेखा अधिकारी
5.	प्रशासनिक हिंदी	**जोण तोमस के** वरिष्ठ लेखापरीक्षक	**विनीत कुमार** सहायक लेखा अधिकारी	**लोकेश कुमार मीणा** सहायक लेखा अधिकारी
6.	वर्णानुक्रम	प्रथम पुरस्कार		
		विनीत कुमार सहायक लेखा अधिकारी	**अश्वति एस** लेखापरीक्षक	**पंकज नयन** सहायक ले. प. अधिकारी
		सचिन सहायक ले. प. अधिकारी	**अविनाश नाथ** लेखापरीक्षक	**अनु गोपी बी** लेखापरीक्षक
7.	हस्तलेखन	**अंजलि एलिज़बेथ** लेखाकार	**रमेश दुगारिया** लेखापरीक्षक	**मनोज कुमार** लेखापरीक्षक
8.	कथा रचना	**अनुराग शुक्ला** सहायक ले. प. अधिकारी	**विजय कुमार** सहायक ले. प.अधिकारी	**पूनम कुशवाह** लेखापरीक्षक
9.	कविता रचना	**अक्षय पंडित** लेखाकार	**पारस कुमार शिवा** सहायक लेखा अधिकारी	**पूनम कुशवाह** लेखापरीक्षक
10.	कविता पाठ	**श्रीजु कुमारजी** सहायक पर्यवेक्षक	**प्रभा एल** सहायक लेखा अधिकारी	**प्रशांत** लेखाकार
11.	आशुभाषण	**प्रभा एल** सहायक लेखा अधिकारी	**पारस कुमार शिवा** सहायक लेखा अधिकारी	**विनीत कुमार** सहायक लेखा अधिकारी
12.	हिंदी गीत-महिला-एकल	**श्रीजु कुमारजी** सहायक पर्यवेक्षक	**प्रभा एल** सहायक लेखा अधिकारी	**अश्वति एस** लेखापरीक्षक
13.	हिंदी गीत-पुरुष-एकल	**आनंद पी सी** लेखापरीक्षक	**मुकेश कुमार पाल** लेखाकार	**अनुरूप एस के** सहायक ले. प. अधिकारी

14.	**समूह गान**	**अनुरूप एस के** सहायक ले. प. अधिकारी एवं टीम **<u>टीम के सदस्य</u>** **कृष्णकला पी आर** सहायक ले. प. अधिकारी **अजिता वी के** लेखापरीक्षक **कृष्णकुमार एस** वरिष्ठ लेखापरीक्षक **अरविंद आर** लेखापरीक्षक **प्रीता टी नायर** वरिष्ठ लेखापरीक्षक **श्रीविद्या आर** वरिष्ठ लेखापरीक्षक **आनंद पी सी** लेखापरीक्षक	**शोभा कुमार बी** सहायक लेखा अधिकारी एवं टीम **<u>टीम के सदस्य</u>** **अनिल कुमार** वरिष्ठ लेखापरीक्षक **अजंता हरिकेश** सहायक लेखा अधिकारी **जोण तोमस के** वरिष्ठ लेखापरीक्षक **मुकेश कुमार पाल** लेखाकार **नलिनी मेनोन** सहायक लेखा अधिकारी **प्रभा एल** सहायक लेखा अधिकारी	**अविनाश नाथ** लेखापरीक्षक एवं टीम **<u>टीम के सदस्य</u>** **साहिल** सहायक ले. प. अधिकारी **श्रीलक्ष्मी** लेखापरीक्षक **जयति रॉय** लेखाकार **प्रिया गोयल** सहायक ले. प. अधिकारी **अनुराग शुक्ला** सहायक ले. प. अधिकारी **इंदु वी नायर** लेखापरीक्षक
15.	**प्रश्नोत्तरी**	**विनीत कुमार** सहायक लेखा अधिकारी	**प्रिया गोयल** सहायक ले. प.अधिकारी	**मीनाक्षी प्रसाद** सहायक लेखा अधिकारी
		मुकेश कुमार पाल लेखाकार	**कृष्णकला पी आर** सहायक ले. प.अधिकारी	**तेजस्व नगन्याल** सहायक लेखा अधिकारी
16.	**अंताक्षरी**	**नीतीश कुमार** लेखाकार	**फिलिप पयस** सहायक ले. प.अधिकारी	**हिमांशु राज** लेखाकार
		निलेश कुमार मौर्य लेखाकार	**मोहम्मद इयास** सहायक ले. प.अधिकारी	**राहुल कुमार राय** सहायक लेखा अधिकारी

हिंदी पखवाड़ा समारोह 2025 : शाखा कार्यालय, तृश्शूर

दिनांक 14.09.2025 से 26.09.2025 तक शाखा कार्यालय, तृश्शूर में लेखापरीक्षा एवं लेखा व हकदारी स्कंधों के संयुक्त तत्वावधान में हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया । इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं, जिनमें प्रशासनिक हिंदी, हिंदी निबंध, सुलेखन, हस्तलेखन, वर्णानुक्रम आदि प्रतियोगिताएं शामिल थीं । 23.09.2025 को राजभाषा के संबंध में ज्ञानवर्धन हेतु अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया ।

प्रतियोगिताओं के विजेता				
क्र. सं.	**प्रतियोगिता का नाम**	**विजेता अधिकारीकर्मचारी/ का नाम (श्रीमती/श्री)**		
		प्रथम पुरस्कार	**द्वितीय पुरस्कार**	**तृतीय पुरस्कार**
1.	**निबंध लेखन**	**संध्या एन** लेखापरीक्षक	**आर्या एस** लेखापरीक्षक	**मंजु सी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक
2.	**प्रशासनिक हिंदी**	**उषा गणपति पी पी** वरिष्ठ लेखा अधिकारी	**क्रिस्टियों जॉय** लेखापरीक्षक	**सुदर्श के एस** लेखापरीक्षक
3.	**सुलेखन**	**हेलन तोमस** लेखापरीक्षक	**संध्या एन** लेखापरीक्षक	**नीनु एम डी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक
4.	**वर्णानुक्रम**	**मंजु सी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक	**गोपिका के** सहायक लेखा अधिकारी	**कृष्णन के एम** सहायक ले. प.अधिकारी
5.	**हस्तलेखन**	**आर्या एस** लेखापरीक्षक	**हेलन तोमस** लेखापरीक्षक	**मंजु सी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक

समापन समारोह दिनांक 26.09.2025 को पूर्वाह्न 11.30 बजे श्री पी के लालु, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) की अध्यक्षता में संपन्न हुआ । समापन समारोह का शुभारंभ प्रार्थना के साथ हुआ । श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने बड़ी तन्मयता के साथ मंच का संचालन किया । श्रीमती गेळी कृष्णा, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने अपने स्वागत भाषण में राजभाषा हिंदी को गति देने हेतु समस्त कर्मचारी-वृंद को प्रेरित किया । श्री पी के लालु, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों को अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करने का आह्वान किया । श्री प्रिन्सण वर्गीस, वरिष्ठ उप महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) ने कार्यालय के कर्मचारियों को हिंदी का प्रचार ऐसे आयोजनों तक सीमित न रखकर अपने दैनिक जीवन का भाग बनाने के प्रेरणादायी उद्धरणों के साथ अपना महत्वपूर्ण वक्तव्य रखा । वरिष्ठ उप महालेखाकारों ने अपने कर कमलों से विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को महालेखाकार महोदया द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र प्रदान किया । इस अवसर पर कार्यालय के कर्मचारियों ने हिंदी फिल्म गीत गाकर सभा का मनोरंजन किया और अपनी मनमोहक नृत्य प्रस्तुति के माध्यम से भारत की समृद्ध संस्कृति की अद्भुत झलक प्रस्तुत की । श्री विष्णु एस पी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक ने समारोह में सहयोग देने वाले सभी पदधारियों के प्रति आभार व्यक्त किया ।

OFFICES OF THE
PRINCIPAL ACCOUNTANTS GENERAL
THRISSUR

हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION

प्रधान महालेखाकारों के कार्यालय,
केरल, शाखा तृशूर
OFFICES OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANTS GENERAL,
KERALA, BRANCH THRISSUR
हिंदी पखवाड़ा समारोह
HINDI FORTNIGHT CELEBRATION
समापन समारोह
VALEDICTORY FUNCTION

हिंदी पखवाड़ा समारोह
समापन समारोह

हिन्दी

हिन्दी

हिंदी सप्ताह समारोह 2025 : शाखा कार्यालय, कोषिकोड़

शाखा कार्यालय, कोषिकोड़ में 15.09.2025 को हिंदी दिवस का पालन करते हुए राजभाषा प्रतिज्ञा ली गई । 23 सितंबर को निबंध लेखन, प्रशासनिक हिंदी, सुलेखन, वर्णानुक्रम, हस्तलेखन आदि प्रतियोगिताएं आयोजित की गई । 26 सितंबर 2025 को समापन समारोह आयोजित किया गया । प्रार्थना गीत के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ । श्रीमती अबीदा अज़ीज, सहायक लेखा अधिकारी ने सभा का स्वागत किया । श्री लीलाधरन पी वी, वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने सम्मेलन की अध्यक्षता की और प्रतियोगिता के विजेताओं के नाम की घोषणा की । सुश्री डिंपल प्रसाद, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक ने आशीर्वाद भाषण दिया, जिसमें उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रयास की सराहना की और हिंदी भाषा के साथ निरंतर जुडे रहने के लिए उन्हें प्रोत्साहित किया । श्री एम टी विजयन, सहायक लेखा अधिकारी के कृतज्ञता ज्ञापन के साथ समारोह संपन्न हुआ, जिसमें उन्होंने सभी कार्मिकों के योगदान एवं सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया ।

प्रतियोगिताओं के विजेता				
क्र. सं.	**प्रतियोगिता का नाम**	**विजेता अधिकारीकर्मचारी/ का नाम (श्रीमती/श्री)**		
		प्रथम पुरस्कार	**द्वितीय पुरस्कार**	**तृतीय पुरस्कार**
1.	**निबंध लेखन**	**अबीदा अज़ीज़** सहायक ले.प.अधिकारी	**एम टी विजयन** सहायक लेखा अधिकारी	**अखिला पी पी** सहायक पर्यवेक्षक
2.	**प्रशासनिक हिंदी**	**एम टी विजयन** सहायक लेखा अधिकारी	**शामिल के वी** सहायक पर्यवेक्षक	**अबीदा अज़ीज़** सहायक ले.प.अधिकारी
3.	**सुलेखन**	**अखिला पी पी** सहायक पर्यवेक्षक	**मोहम्मद सहीर एन पी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक	**अबीदा अज़ीज़** सहायक ले.प.अधिकारी
4.	**वर्णानुक्रम**	**अबीदा अज़ीज़** सहायक ले.प.अधिकारी	**संजीवन पी वी** सहायक पर्यवेक्षक	**बीना ए सी** सहायक पर्यवेक्षक
5.	**हस्तलेखन**	**अखिला पी पी** सहायक पर्यवेक्षक	**बीना ए सी** सहायक पर्यवेक्षक	**मोहम्मद सहीर एन पी** वरिष्ठ लेखापरीक्षक

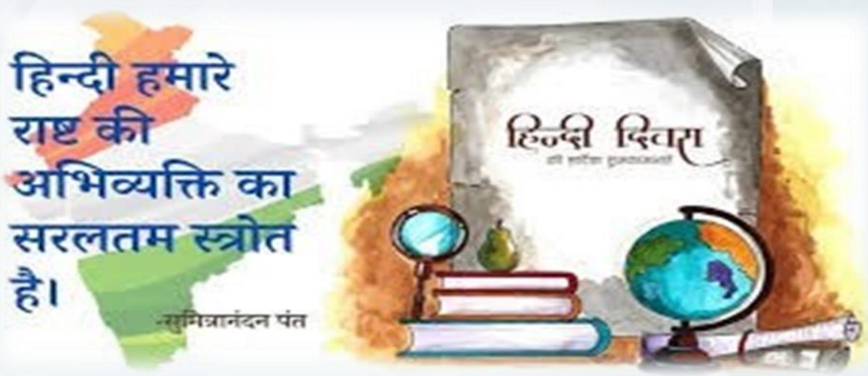

हिंदी सप्ताह समारोह 2025 : शाखा कार्यालय, एरणाकुलम

महालेखाकार (ले व ह), केरल के शाखा कार्यालय, एरणाकुलम में 19 से 26 सितंबर 2025 तक हिंदी सप्ताह मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती मिनी पवित्रन, सहायक पर्यवेक्षक के नेतृत्व में प्रार्थना के साथ हुई। श्री अरुण कुमार बी, लेखाकार द्वारा स्वागत भाषण दिया गया, जिसके बाद श्रीमती लोला आर वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने आशीर्वाद भाषण दिया। इस संबंध में, 19 सितंबर 2025 को कर्मचारियों के लिए आयोजित पोस्टर डिजाइनिंग, हस्तलेखन, श्रुतलेखन और पोस्टर डिज़ाइनिंग प्रतियोगिताएं के विजेताओं को श्रीमती लोला आर, वरिष्ठ लेखा अधिकारी पुरस्कार वितरित किए गए। श्रीमती लक्ष्मी प्रिया टीजी, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया और कार्यक्रम का संचालन श्रीमती रेणुका जोशी, कनिष्ठ अनुवाद द्वारा किया गया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रतियोगिताओं के विजेता				
क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता अधिकारी/कर्मचारी का नाम (श्री/श्रीमती)		
		प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	**पोस्टर डिजाइनिंग**	**विद्या मोहनलाल पी** वरिष्ठ लेखाकार	**लक्ष्मिप्रिया टी जी** सहायक लेखा अधिकारी	**मिनी पवित्रन** पर्यवेक्षक
2.	**हस्तलेखन**	**आन्ड्रिया लुइस** सहायक पर्यवेक्षक	**लक्ष्मिप्रिया टी जी** सहायक लेखा अधिकारी	**विद्या मोहनलाल पी** वरिष्ठ लेखाकार
3.	**श्रुतलेखन**	**अजीत चंद्रन सी बी** सहायक ले.प.अधिकारी	**शोभना कुमारी वी आर** सहायक पर्यवेक्षक	**सुनिल पॉल** सहायक पर्यवेक्षक
4.	**प्रशासनिक हिंदी**	**लक्ष्मिप्रिया टी जी** सहायक लेखा अधिकारी	**शोभना कुमारी वी आर** सहायक पर्यवेक्षक	**विद्या मोहनलाल पी** वरिष्ठ लेखाकार

हिंदी सप्ताह समारोह 2025 – शाखा कार्यालय, कोट्टयम

महालेखाकार (ले व ह) का कार्यालय, केरल के शाखा कार्यालय कोट्टयम में 19 से 26 सितंबर 2025 तक हिंदी सप्ताह निम्नलिखित कार्यक्रम के साथ मनाया गया । कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती सिंधु सी सी, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा प्रार्थना के साथ की गई । श्री जयराम टी, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा स्वागत भाषण दिया गया, जिसके बाद श्रीमती सेतुलक्ष्मी टी एस, वरिष्ठ लेखा अधिकारी ने आशीर्वाद भाषण दिया । इस संबंध में, कर्मचारियों के लिए आयोजित पोस्टर डिजाइनिंग, हस्तलेखन, श्रुतलेखन और प्रशासनिक हिंदी प्रतियोगिताएं के विजेताओं को श्रीमती सेतुलक्ष्मी टी एस, वरिष्ठ लेखा अधिकारी द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए । श्रीमती तंकच्चन टी, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया । कार्यक्रम का संचालन श्रीमती संध्या एस, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा किया गया । कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ हुआ ।

प्रतियोगिताओं के विजेता				
क्र. सं.	प्रतियोगिता का नाम	विजेता अधिकारी/कर्मचारी का नाम (श्री/श्रीमती)		
		प्रथम पुरस्कार	द्वितीय पुरस्कार	तृतीय पुरस्कार
1.	**पोस्टर डिजाइनिंग**	**साली पी डी** सहायक पर्यवेक्षक	**श्रीप्रसाद** वरिष्ठ लेखाकार	**जयराम टी** सहायक ले.प.अधिकारी
2.	**हस्तलेखन**	**साली पी डी** सहायक पर्यवेक्षक	**जयराम टी** सहायक ले.प.अधिकारी	**सिंधु सी सी** सहायक लेखा अधिकारी
3.	**श्रुतलेखन**	**वसंता कुमारी आर** सहायक लेखा अधिकारी	**सिंधु सी सी** सहायक लेखा अधिकारी	**सुमा जॉर्ज** सहायक लेखा अधिकारी
4.	**प्रशासनिक हिंदी**	**सिंधु सी सी** सहायक लेखा अधिकारी	**वसंता कुमारी आर** सहायक लेखा अधिकारी	**सुमा जॉर्ज** सहायक लेखा अधिकारी

डिजिटल युग में मानवीय स्पर्श: क्या हम मशीन बनते जा रहे हैं?

राहुल कुमार राय
सहायक लेखा अधिकारी

"तकनीक हमें शक्तिशाली बनाती है, लेकिन मानवता ही हमें अर्थ देती है।"

मानव सभ्यता के विकास की यात्रा निरंतर परिवर्तन और नवाचार की कहानी रही है। पत्थर युग से लेकर औद्योगिक क्रांति तक और फिर सूचना प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग तक, हर चरण ने हमारे जीवन को एक नई दिशा प्रदान की है। आज हम जिस दौर में जी रहे हैं, उसे 'डिजिटल युग' कहा जाता है—एक ऐसा समय जहाँ तकनीक ने हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है।

स्मार्टफोन, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, क्लाउड कंप्यूटिंग और सोशल मीडिया जैसे उपकरणों ने हमारे जीवन को अत्यंत सरल और तेज़ बना दिया है। कार्यस्थल से लेकर व्यक्तिगत जीवन तक, हर जगह डिजिटल माध्यमों का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। परंतु इस तीव्र प्रगति के बीच एक महत्वपूर्ण प्रश्न उभरता है—क्या हम इस डिजिटल सुविधा के बीच अपनी मानवीय संवेदनाओं को खोते जा रहे हैं? क्या हम धीरे-धीरे मशीनों की तरह व्यवहार करने लगे हैं? क्या हमारी भावनाएँ, रिश्ते और सामाजिक जुड़ाव केवल औपचारिकता बनकर रह गए हैं?

डिजिटल युग का अर्थ केवल तकनीकी उन्नति नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रतीक है। आज सूचनाएँ कुछ सेकंड में दुनिया के किसी भी कोने से प्राप्त की जा सकती हैं। संचार के साधन इतने उन्नत हो चुके हैं कि भौगोलिक दूरी अब कोई बाधा नहीं रही। ई-गवर्नेंस ने प्रशासन को पारदर्शी बनाया, ऑनलाइन शिक्षा ने ज्ञान को सुलभ बनाया, डिजिटल बैंकिंग ने वित्तीय लेन-देन को सरल किया और वर्क फ्रॉम होम ने कार्यस्थल की परिभाषा बदल दी तथा इन सभी परिवर्तनों ने मानव जीवन को अधिक सुविधाजनक बनाया है, परंतु इसके साथ ही मानवीय संपर्क के स्वरूप में भी परिवर्तन आया है।

मानवीय स्पर्श का तात्पर्य केवल शारीरिक संपर्क से नहीं है, बल्कि यह भावनात्मक जुड़ाव, सहानुभूति, संवेदनशीलता और आपसी विश्वास का प्रतीक है। यही वह तत्व है जो किसी भी संबंध को जीवंत और सार्थक बनाता है। कार्यालय में जब कोई सहकर्मी हमारी सहायता करता है, जब कोई वरिष्ठ हमें प्रोत्साहित करता है, या जब टीम मिलकर किसी समस्या का समाधान करती है—ये सभी मानवीय स्पर्श के उदाहरण हैं। यह स्पर्श ही कार्यस्थल को एक परिवार जैसा वातावरण प्रदान करता है।

आज के समय में हम तकनीक पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं। सुबह उठते ही मोबाइल देखना, दिनभर स्क्रीन पर कार्य करना और रात को सोशल मीडिया पर समय बिताना—यह हमारी दिनचर्या बन चुकी है। इस डिजिटल निर्भरता के कारण—आमने-सामने संवाद में कमी आई है, भावनात्मक अभिव्यक्ति सीमित हो गई है, रिश्तों में औपचारिकता बढ़ गई है तथा हम अब "मैसेज" भेजकर अपनी जिम्मेदारी पूरी समझ लेते हैं, जबकि पहले व्यक्तिगत मुलाकातों का महत्व अधिक था।

आधुनिक कार्यालयों में डिजिटल तकनीक का व्यापक उपयोग हो रहा है। ई-ऑफिस, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, डिजिटल फाइलिंग और ऑटोमेशन ने कार्य को अत्यधिक तेज और प्रभावी बना दिया है। यह हमारे जीवनयापन को सकारात्मक रूप से (जैसे कार्य की गति में वृद्धि, पारदर्शिता और जवाबदेही, समय और संसाधनों की बचत) और नकारात्मक रूप से (जैसे व्यक्तिगत संबंधों में कमी, टीम भावना का ह्रास, कर्मचारियों में अकेलेपन की भावना) दोनों रूपों से प्रभावित करता है।

जब संवाद केवल ईमेल और चैट तक सीमित हो जाता है, तो भावनात्मक जुड़ाव कमजोर पड़ने लगता है। सोशल मीडिया ने हमें दुनिया से जोड़ा है, लेकिन इस जुड़ाव की वास्तविकता पर प्रश्नचिन्ह भी लगाता है। हम हजारों लोगों से जुड़े होते हैं, परंतु वास्तविक जीवन में अकेलापन महसूस करते हैं। लाइक्स और कमेंट्स ने वास्तविक संवाद की जगह ले ली है, तुलना की भावना बढ़ी है, आत्म-संतुष्टि में कमी आई है ।

यह स्थिति हमें एक ऐसी दुनिया में ले जा रही है जहाँ हम डिजिटल रूप से सक्रिय, पर भावनात्मक रूप से निष्क्रिय हो रहे हैं। साथ ही; AI और मशीन लर्निंग ने कार्य करने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया है। आज मशीनें डेटा का विश्लेषण कर सकती हैं, निर्णय ले सकती हैं और कई कार्यों को स्वतः कर सकती हैं। परंतु प्रश्न यह है— क्या मशीनें मानवीय संवेदनाओं को समझ सकती हैं? मशीनें तेज और सटीक हो सकती हैं, लेकिन उनमें सहानुभूति, करुणा और नैतिकता का अभाव होता है। जबकि यही गुण मानव को विशिष्ट बनाते हैं।

डिजिटल युग का एक महत्वपूर्ण प्रभाव मानसिक स्वास्थ्य पर भी पड़ा है। लगातार स्क्रीन टाइम, सोशल मीडिया का दबाव, कार्य और निजी जीवन के बीच संतुलन की कमी; इन सभी कारणों से तनाव, चिंता और अवसाद जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं। वर्क फ्रॉम होम और डिजिटल कनेक्टिविटी ने कार्य और निजी जीवन के बीच की सीमाओं को धुंधला कर दिया है। अब कर्मचारी 24x7 उपलब्ध रहने के दबाव में रहते हैं। इससे—

व्यक्तिगत जीवन प्रभावित होता है, पारिवारिक संबंध कमजोर होते हैं और साथ ही मानसिक थकान बढ़ती है । डिजिटल युग में सबसे बड़ी आवश्यकता है—मानवीय मूल्यों को पुनः स्थापित करना। सहानुभूति, सहयोग, संवाद, सम्मान जैसे मूल्यों के बिना कोई भी तकनीकी प्रगति अधूरी है।

आख़िरकार यह प्रश्न भी उठता है कि इसका समाधान कैसे हो; इसके लिए हमें कुछ नियमित दिनचर्या अपनानी होगी जैसे तकनीक का उपयोग करें, परंतु उस पर पूरी तरह निर्भर न हों , ऑफिस में आमने-सामने बातचीत और टीम इंटरैक्शन को प्रोत्साहित, डिजिटल डिटॉक्स, सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेल और समूह गतिविधियाँ आयोजित किया जाए तथा मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने के लिए काउंसलिंग, मेडिटेशन और विश्राम तकनीकों को अपनाया जा सकता है ।

भविष्य में तकनीक और अधिक उन्नत होगी—रोबोटिक्स, AI, और ऑटोमेशन का विस्तार होगा। परंतु यह हमारे हाथ में है कि हम इस तकनीक का उपयोग किस प्रकार करते हैं। यदि हम मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हैं, तो तकनीक हमारे विकास का माध्यम बनेगी। अन्यथा, हम स्वयं मशीनों की तरह व्यवहार करने लगेंगे। डिजिटल युग ने हमें असीम संभावनाएँ दी हैं,परंतु इसके साथ यह चुनौती भी दी है कि हम अपनी मानवीय पहचान को बनाए रखें। हमें यह समझना होगा कि—

मशीनें हमारे कार्य को आसान बना सकती हैं, लेकिन हमारे संबंधों को नहीं।

अतः आवश्यक है कि हम तकनीक और मानवता के बीच संतुलन स्थापित करें और एक ऐसी कार्य संस्कृति विकसित करें जो न केवल प्रभावी हो, बल्कि संवेदनशील और मानवीय भी हो।

"सच्ची प्रगति वही है, जहाँ तकनीक और मानवता साथ-साथ चलें।"

“धरती की सांस”- श्री भगवतीप्रसाद वाजपेयी

भगवतीप्रसाद वाजपेयी (11 अक्टूबर 1899 - 8 मई 1973) हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार थे । उनका जन्म कानपुर में सन् 1899 में हुआ ।

उनकी पहली कहानी 'यमुना' 1923 में 'श्री शारदा' नाम की पत्रिका में प्रकाशित हुई । इससे पहले वे कविता के क्षेत्र में आ चुके थे । वाजपेयी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और कहानीकार के रूप में अपनी प्रभावी सृजन-कला का परिचय देते हैं। उनके प्रमुख उपन्यास हैं - त्यागमयी, पतवार, भूदान । 'छलना' और 'राय पिथौरा' उनके नाटक हैं । कविता संग्रह हैं – 'ओस की बूँदें' । इसके अतिरिक्त उन्होंने बालोपयोगी साहित्य का सृजन भी किया है एवं संपादन के क्षेत्र से भी जुड़े रहे हैं ।

कई वर्ष हिंदी साहित्य की सेवा करके आपने हिंदी को कई अमूल्य उपहार प्रदान किए । ‘मिठाईवाला’ नामक कहानी के अविस्मरणीय लेखक के रूप में वाजपेयी जी हिंदी प्रेमियों के आराधना-पात्र बन गए । वे एक सफल कहानीकार और उपन्यासकार हैं । आपकी भाषा में ऐसी एक शक्ति है जिनसे पाठक का मन समय-समय पर शीतल बन जाता है । प्रेमपथ, लालिमा, पिपासा, पतिता की साधना, दो बहनें, निमंत्रण, धरती की सांस, रात और प्रभात आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं । जीवन के हर पहलू पर आपकी दृष्टि जाती है । आपकी रचनाओं में जो पात्र आते हैं वे हमारे चारों ओर रहनेवाले ही हैं । कभी-कभी उन पात्रों में से कुछ एक को हम अपने में ही खोजने के लिए प्रेरित हो जाएँगे, क्योंकि हृदय की गहराई तक पहुँचने की आपकी शक्ति असीम है ।

कहानीकार के रूप में वाजपेयी जी के प्रमुख संग्रह हैं 'मधुपर्क', 'हिलोर', 'पुष्करिणी', 'दीपमालिका', 'उपहार', 'खाली बोतल', 'अंगारे', 'स्नेह' आदि । वाजपेयी जी की कहानियों में मध्यवर्गीय मानसिक ऊहापोह को विशेष महत्त्व मिला है । बदलते समाज और बदलते वातावरण एवं नए प्रश्नों और समस्याओं को वाजपेयी जी ने अधिक महत्त्व दिया है। उन्होंने कुछ कहानियाँ समाज की विकृत परंपराओं, रूढ़ियों, कुरीतियों आदि को लेकर लिखी हैं तो कुछ कहानियों में विभिन्न वर्गों के बीच की दूरी, कटुता, अविश्वास, घृणा का सटीक चित्रण हुआ है। उनकी कहानियों में कहीं प्रेमचंद के आदर्शोन्मुख सामाजिक यथार्थ के दर्शन होते हैं तो कहीं शरतचन्द्र की भावुकता और मार्मिकता मिलती है। वाजपेयी जी की कहानियाँ आकार की दृष्टि से प्रायः छोटी होती हैं परंतु उनमें व्यंजकता होती है । कथानक अल्प होते हुए भी कहानियाँ तीव्र घटनाक्रम से बाँधे रखती

हैं। शीर्षक आकर्षक और व्यंजनात्मक होते हैं । भाषा की स्वाभाविकता और कहने का विशिष्ट ढंग वाजपेयी जी की कहानियों की निजी विशेषता है।

सन् 1954 ई० में 'धरती की सांस' नाम का उपन्यास प्रकाशित हुआ । यह कृति आकार-प्रकार में साधारण थी किन्तु कथावस्तु के गठन और शैली-सौन्दय के कारण इसका प्रचार और प्रसिद्धि अधिक हुई । कथावस्तु को कोई नया मोड़ नहीं दिया गया है । वाजपेयी जी के उपन्यासों में अक्सर आदर्शवाद, यथार्थवाद, मानवीय संबंधों की जटिलता और समाज के नैतिक उत्थान को दिखाया जाता है । इस कृति में भी उन्होंने भूमि (धरती) और उससे जुड़े इंसानी जीवन के अंतर्संबंधों को बहुत ही भावुक और जीवंत रूप में प्रस्तुत किया है। इस उपन्यास में मध्यवर्गीय जीवन की कहानी है । निरंजन एक महत्वाकांक्षी युवक था । जब वह कॉलेज में बीए के लिए पढ़ रहा था तब शोभना नामक एक लड़की से परिचित हुआ । शोभना निरंजन के लिए सब कुछ न्योछावर करने के लिए तैयार थी । स्वाभाविक रूप से निरंजन भी शोभना पर आकृष्ट था । वे दोनों कॉलेज में नाटक आदि कार्यक्रमों में एक साथ भाग लेते रहे । लेकिन निरंजन के लिए अपना अलग रास्ता था । काल की अति में शोभना और निरंजन अलग हो गए। उनके जीवन की धाराएँ अलग-अलग मार्गों से होकर बहने लगीं। आठ बरस तक वे अलग रहे । इन आठ वर्षों के अंदर दोनों में काफी परिवर्तन भी हुए । निरंजन की शादी हुई । उसकी पत्नी के रूप में सुमित्रा नामक एक स्नेहमयी साधारण औरत आयी । उसका एक बच्चा भी हुआ-अखिल । इस प्रकार निरंजन एक कुटुंब का नायक बन गया । शोभना भी अब तक एक कॉलेज की वाइस प्रिंसिपल हो गई थी । इतनी पढ़ी-लिखी, सुसंस्कृत होने पर भी शोभना निरंजन को भूल न सकी । फिर भी आठ बरसों की लंबी अवधि तक प्रतीक्षा करते करते वह थक गई । फिर भी उसमें आशा की किरणें अभी शेष रही ।

एक दिन शोभना रेल से कहीं जा रही थी तो गाड़ी में सुमित्रा से उसकी मुलाकात हुई । वे दोनों सहेलियाँ बन गई । शोभना अखिल पर इतनी आकृष्ट हुई कि वह उससे मिलने समय-समय पर सुमित्रा के घर जाती रही । इस बीच शोभना निरंजन से रास्ते में मिली और वह जान गई कि जिस माता और पुत्र से वह बार-बार मिल रही थी, वे वास्तव में कौन हैं । फिर भी उसके मुखड़े पर उदासी की कालिमा छायी नहीं ।

निरंजन ऊनी कपड़ों का एजेंट बन गया । एक दिन कपड़ों की 'साम्पुलों' के साथ वह बाहर निकला तो रास्ते से जानेवाली एक रिक्शा के साथ एक ढेलागाड़ी टकरा गई । निरंजन के समयोचित व्यवहार के कारण रिक्शा पर जो बूढा व्यक्ति सवार था, बच गया । वह बूढा व्यक्ति सूर्यकुमार थे । वे सुन्दर साहसी निरंजन पर आकृष्ट हुए । उन्होंने कुछ ही दिनों के अंदर निरंजन को अपने मिल के असिस्टेंट मैनेजर बना दिया । उनका पुत्र प्रभात जो उस मिल का मैनेजर था, को अपने पिता के ऐसे व्यवहार बिल्कुल पसंद न आए । सूर्यकुमार ने उसकी परवाह नहीं की ।

जब तब शोभना और निरंजन की मुलाकात होती रही । शोभना सुमित्रा से भी मिलती रही । निरंजन यह जान चुका था कि शोभना सुमित्रा से मिलती रहती है और कभी-कभी आर्थिक सहायता भी देती है ।

शोभना स्वयं यह समझ न सकी कि मैं क्यों हमेशा निरंजन के घर में जाने के लिए लालायित होती हूँ । लेकिन वह इतना जानती थी कि वहाँ पहुंचते ही उसको एक अपूर्व उल्लास होता है । अखिल के मुखडे के दर्शन मात्र से उसकी एक अज्ञात लालसा बुझ जाती है । सुमित्रा के लिए शोभना एक प्रश्नचिहन थी । वह इस प्रश्न का हल न निकाल सकी कि शोभना अखिल के प्रति इस प्रकार असीम प्रेम क्यों प्रकट करती है?

सुमित्रा यह जानती थी कि शोभना और निरंजन परिचित हैं, वे सहपाठी रह चुके हैं । लेकिन उसने निरंजन से यह बात न कही । एक दिन किसी चीज की खोज करते समय सुमित्रा को निरंजन की पेटी के अंदर से शोभना और निरंजन के विद्यार्थी जीवन के अवसर पर खींची गई फोटो की कुछ प्रतियाँ मिली । एक फोटो में निरंजन शहज़ादा सलीम के वेष में और शोभना नूरजहाँ के वेष में साथ-साथ बैठे हुए थे । यह देखकर सुमित्रा का चेहरा लाल हो उठा । वह इस प्रवंचना को सहन न कर सकी । कई दिनों से उसके दिल में यह शंका उगी हुई थी कि निरंजन और शोभना के बीच में ज़रूर कोई अज्ञात संबंध होगा । अब परिस्थितियों की अनुकूलता पाकर वह शंका स्वयं सत्य बन गई । उसकी यह धारणा प्रबल हो गई कि अखिल से मिलने का बहाना करके शोभना का बार-बार उसके घर में आने का कारण निरंजन को अपना बनाना है ।

इस बीच में निरंजन सूर्यकुमार की पत्नी से मिलता है । उन निर्मल हृदयवाले वृद्ध दंपतियों की आशा थी कि निरंजन शोभना का पति बन जाए । निरंजन के विवाहित होने की बात जानकर उन्हें बड़ी निराशा होती है । सुमित्रा की शंका, पहले जो हृदय में ही छिपी रही, किंतु धीरे-धीरे उसकी तंदुरुस्ती पर प्रभाव डालने लगी । अचानक एक दिन मिल में रहते वक्त निरंजन को शोभना का फोन आया कि सुमित्रा की स्थिति एकदम बिगड़ गई है । तुरंत अनेक चिंताओं की जाल में उलझते हुए निरंजन घर पहुंचा । सूर्यकुमार, प्रभात बाबू, शोभना, डाक्टर आदि खड़े थे । निरंजन को ऐसा प्रतीत हुआ कि धरती लंबी सांस ले रही है, भूकंप आने वाला है । आश्चर्य! उसकी भावना साक्षात् हुई । दुनिया हिली डुली । न जाने क्या परिवर्तन हुए । निरंजन ने देखा कि अखिल निराधार होता जा रहा है । अपने को संभालने भर की शक्ति निरंजन में शेष रही । लेकिन वह अखिल को संभालने की शक्ति की खोज करने लगा । उसने देखा कि शोभना पास खड़ी है । उसने शोभना से अखिल को संभालने की प्रार्थना की । यहाँ उपन्यास खत्म होता है ।

इस उपन्यास में सिर्फ भौतिकी भूकंप नहीं, एक आंतरिक भूकंप हो जाता है जो एक आबाद और स्नेहपूर्ण दुनिया को बदल देता है । उस भूकंप के कारण निरंजन और शोभना दोनों की दुनिया बदल जाती हैं । निरंजन की दुनिया में एक महानाश होता है । सुमित्रा उसकी दुनिया की पटरानी हमेशा के लिए बिछुड़ गई । उसकी दुनिया शून्य बन गई । अखिल की अम्मा मर गई । वह आधारहीन हो गया । लेकिन निरंजन की दुनिया में धरती की सांस - भूकंप के कारण कुछ परिवर्तन भी हुए । उसकी दुनिया की शून्यता को मिटाकर वहाँ एक प्रेममयी आत्मा आबाद हुई । अखिल को सहारा देने उसकी एक दूसरी अम्मा आई, वह थी शोभना ।

"वह... और मैं"

राहुल कुमार राय
सहायक लेखा अधिकारी

मैंने इश्क़ को

पहली बार तब जाना,

जब स्कूल की घंटी

दिल की धड़कनों से तेज़ लगने लगी थी।

वो किताबों के पीछे छिपी मुस्कान,

वो नज़रें जो नाम नहीं लेती थीं,

पर हर रोज़

मुझे मेरी ही कहानी सुना जाती थीं।

उस उम्र में

इश्क़ मतलब

बस इतना था—

वो सामने बैठी हो

और पूरा दिन पूरा लगे।

फिर कॉलेज आया...

जहाँ सपने बड़े थे

और इश्क़ थोड़ा बेपरवाह।

कॉफी के कप में

भविष्य घुलने लगा था,

हाथ थामकर

ज़िंदगी तय करने की

नादानी थी हममें।

वो लेक्चर कम

और बातें ज़्यादा,

वो रातें

जो कल की चिंता से

बिलकुल बेख़बर थीं।

हमने कसमों से ज़्यादा

ख्वाब बाँटे थे,

और माना था

कि ये साथ

हमेशा के लिए है।

पर इश्क़

हमेशा कहानी नहीं सुनता,
कभी-कभी
सबक भी बन जाता है।

धीरे-धीरे
शब्द कम होने लगे,
और ख़ामोशियाँ
बहस बन गईं।

हम दोनों
सही थे अपनी जगह,
और शायद
गलत भी।

फिर एक दिन
बातें खत्म नहीं हुईं,
बस रुक गईं ।

उसने कहा—
"अब नहीं हो पा रहा…"
और मैंने…
कुछ नहीं कहा,
क्योंकि
इश्क़ में ज़बरदस्ती
सबसे बड़ा अपराध होता है।

ब्रेकअप
सिर्फ़ एक रिश्ता नहीं तोड़ता,
वो आदमी को
अंदर से बदल देता है।

वो गाने
जो कभी हमारे थे,
अब सिर्फ़ मेरे रह गए।

वो रास्ते
जहाँ हम हँसते थे,
अब मुझे
ख़ामोशी सिखाने लगे।

रातें लंबी हो गईं,
और सुबहें
थोड़ी भारी।

पर समय…
वो बिना पूछे
सब सिखा देता है।

मैंने सीखा
कि हर प्यार
मंज़िल तक नहीं जाता,
कुछ सफ़र बनकर
ज़िंदगी बदल देता है।

मैंने सीखा

कि 'मूव ऑन'

भूलना नहीं होता,

बस दर्द को

सीने में सुला देना होता है।

आज

ज़िंदगी बदल गई है।

मैं पहले जैसा नहीं हूँ—

अब मैं

कम बोलता हूँ,

ज़्यादा समझता हूँ।

अब प्यार में

खुद को खोता नहीं,

खुद को बचाता हूँ।

वो अब भी

मेरी कहानी का हिस्सा है,

पर...

अब मेरी ज़िंदगी नहीं।

अगर वो आज सामने आ जाए

तो शिकायत नहीं होगी,

बस एक सुकून होगा—

खुद को जोड़ना भी।

कि जो था

वो खूबसूरत था।

क्योंकि

कुछ लोग

हमारी ज़िंदगी में

हमेशा रहने के लिए नहीं,

हमें बेहतर इंसान

बनाने के लिए आते हैं।

और आज

अगर मैं प्यार करता हूँ,

तो डर के साथ नहीं—

सम्मान के साथ करता हूँ।

क्योंकि उसने मुझे

प्यार करना सिखाया,

टूटना सिखाया,

और फिर

वो... मेरी अधूरी मोहब्बत थी,

और मैं...

उसके बाद का इंसान।

मिट्टी का घर

पारस कुमार शिवा
सहायक लेखा अधिकारी

शहर के पक्के मकान में इतने साल बिताने के बाद भी अक़्सर मुझे अपने गांव के कच्चे मकान की याद आ जाती है । कई बार वहां कीड़े आ जाया करते थे, बारिश में छत भी टपकती थी पर वह घर जिंदा था, आजकल के ईंट-सीमेंट से बने मकान मजबूत तो हैं पर उनमें जान नहीं है - वे मुर्दे से लगते हैं ।

मां नियमित रूप से घर की गोबर से लिपाई करती थी । बाहर ही घर से बड़ा आंगन, उसी के एक हिस्से में गाय - भैंसों का तबेला, जीवन सरल था । हमारे आंगन में एक नीम का पेड़ था जिसकी छांव में सारी दोपहर बीतती थी । घर का दरवाजा तो बस नाममात्र का ही था, कभी मजबूत दरवाजे की जरूरत ही नहीं पड़ी ।

पिताजी शाम को आने के बाद घर के बाहर ही खाट डालकर सोते थे । जब भी वो मेरे गाल पर प्यार से हाथ फेरते तो उनके खुरदुरे हाथ थोड़ा चुभते पर हमने उनसे कभी कहा नहीं । मां अक़्सर हमें मार दिया करती थी पर पिता जी ने कभी अपनी आवाज ऊंची न करी। उनके लिए बच्चे ही उनकी संपत्ति थे ।

पिताजी कई बार रूपये देकर संबंधियों और मित्रों की सहायता कर दिया करते थे जिससे उनमें और मां में लड़ाई हुआ करती थी । पिता जी के केवल हाथ सख़्त थे । ये पता होने के बावजूद कि पैसे वापस आने की कोई उम्मीद नहीं है, वे अपना हाथ पीछे नहीं खींचते थे । उनका मानना था कि रिश्ते ही असली धन है । मुझे उस समय समझ नहीं आता था कि कौन सही है फिर मैं दोबारा खेल में लग जाता था । अक्सर मैं मां की गोद में बैठता था और बहन पिताजी की ।

फिर एक ऐसी बरसात हुई जिसे मैं कभी भुला नहीं पाऊंगा । मैं और मेरी बहन खेलते हुए स्कूल से आ रहे थें, सब अच्छा था फिर घर पहुंचकर हमने देखा कि घर की छत टूट चुकी है । वहां पड़ोस के लोग खड़े थे, हमें देखकर उन्होंने हमसे पूछा कि तुम्हारी मां कहां है और हमने रोना शुरू कर दिया । कुछ समझ नहीं आ रहा था, फिर पीछे से दौड़ने की आवाज आई, वह हमारी मां थी । पहले उनका ध्यान घर पर गया फिर

उन्होंने हम दोनों को देखा और पकड़कर रोने लगी । पता नहीं क्या चल रहा था पर हम सब रोये जा रहे थे । पिताजी खेत पर ही थे । हमारा घर टूट चुका था पर सब सलामत थे, उस दिन एहसास हुआ कि घर तो अपनों से बनता है, ईंट और गारे से नहीं । अब समझ आता है कि मां यह सोचकर रो रही थी कि क्या हो सकता था जो कि न हुआ । कुछ देर में पिताजी भी वहां आ गए - हम तीनों को ऐसी हालत में देखकर उनकी आंख से भी आंसू टपक गए । फिर उन्होंने हमें गले से लगाया ।

अगले दिन पिताजी ने गांव में लडडू बांटे इसलिए नहीं कि उनका मकान टूट गया था बल्कि इसलिए कि उनका घर अभी भी सलामत था । उस समय तो मैंने लड्डू खा लिए थे पर उन लड्डुओं की मिठास अब मेरे हृदय में उतरी है ।

वृद्धावस्थाः
जीवन का स्वर्णिम काल

निधिलक्ष्मी
वरिष्ठ अनुवादक

वृद्धावस्था मानव जीवन का अंतिम और महत्वपूर्ण चरण है । यह वह समय होता है जब व्यक्ति अपने जीवन के अनुभवों, उपलब्धियों और संघर्षों को याद करता है । वृद्ध लोग परिवार और समाज के लिए ज्ञान तथा अनुभव का अमूल्य स्रोत होते हैं ।

हमारे समाज में बुजुर्गों को सम्मान का स्थान दिया गया है । उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय परिवार के पालन-पोषण, बच्चों की शिक्षा और समाज की सेवा में बिताया होता है । उनके अनुभव हमें सही निर्णय लेने और जीवन की कठिनाईयों का सामना करने में सहायता करते हैं ।

वृद्धावस्था के साथ कुछ शारीरिक और मानसिक चुनौतियाँ भी आती हैं । बढ़ती उम्र के कारण स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं । कई बार बुजुर्ग अकेलापन महसूस करते हैं क्योंकि परिवार के सदस्य अपने कार्यों में व्यस्त रहते हैं । इसलिए उन्हें प्रेम, सम्मान और सहयोग की आवश्यकता होती हैं ।

आज के आधुनिक युग में संयुक्त परिवारों की संख्या कम हो रही है, जिससे कई बुजुर्ग अकेलापन महसूस करते हैं । एसे समय में परिवार और समाज का दायित्व है कि वे उनका सम्मान करें, उनसे बातचीत करें और उनकी आवश्यकताओं का ध्यान रखें ।

बुजुर्ग परिवार की नींव होते हैं । वे अपने अनुभवों से बच्चों और युवाओं को सही मार्ग दिखाते हैं । उनके द्वारा सुनाई गई कहानियाँ, जीवन के अनुभव और संस्कार आनेवाली पीढ़ियों को प्रेरित करते हैं । वृद्धावस्था हमें यह भी सिखाती है कि जीवन में प्रेम, सम्मान और सहयोग का कितना महत्व है । यदि हम अपने बुजुर्गों का आदर करेंगे, तो आने वाली पीढ़ियाँ भी हमारा सम्मान करेंगी ।

निष्कर्षतः, वृद्धावस्था जीवन का स्वर्णिम काल है । हमें बुजुर्गों को बोझ नहीं, बल्कि परिवार और समाज की अमूल्य धरोहर मानना चाहिए । जिस घर में बुजुर्गों का सम्मान होता है, उस घर में सुख और शांति का वास होता है ।

तिरुक्कुरल

'तिरुक्कुरल' तमिल साहित्य का एक महान और प्रसिद्ध ग्रंथ है । इसकी रचना तमिल महान संत कवि एवं दार्शनिक तिरुवल्लुवर ने की थी । यह ग्रंथ मानव जीवन के नैतिक मूल्यों, कर्तव्यों और आदर्शों का मार्गदर्शन करता है साथ ही अपने संक्षिप्त लेकिन गहरे विचारों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध भी है ।

'तिरुक्कुरल' में कुल 1330 दोहे (कुरल) हैं, जिन्हें 133 अध्यायों में विभाजित किया गया है । यह ग्रंथ तीन भागों में बाँटा हुआ है - अरम (धर्म), पोरुल (अर्थ) और इनबम (प्रेम) । इसमें मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत मूल्यों जैसे सत्य, ईमानदारी, दया, शिक्षा, मित्रता और अच्छे शासन जैसे विषयों पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए गए हैं ।

'तिरुक्कुरल' हमें सत्य बोलने, दया करने, शिक्षा प्राप्त करने, माता-पिता का सम्मान करने तथा दूसरों की सहायता करने की सीख देता है । इसकी शिक्षाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी प्राचीन काल में थीं । तिरुक्कुरल को किसी विशेष धर्म से नहीं जोड़ा गया है । इसके उपदेश सभी लोगों के लिए समान रूप से उपयोगी हैं । यही कारण है कि इसे विश्व की महान नैतिक पुस्तकों में गिना जाता है ।

आज भी *'तिरुक्कुरल'* के संदेश लोगों को अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं । यह ग्रंथ हमें सदाचार,मानवता और नैतिकता का महत्व सिखाता है । *'तिरुक्कुरल'* केवल तमिल साहित्य की अमूल्य धरोहर ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिए प्रेरणा का स्रोत है और यह जीवन को सही दिशा देनेवाला ज्ञान का अनमोल खज़ाना है ।

***'तिरुक्कुरल'* की कुछ प्रसिद्ध पंक्तियाँ (हिंदी भावार्थ) –**

* **"जैसे सभी अक्षरों का प्रारंभ 'अ' से होता है, वैसे ही संसार का प्रारंभ 'ईश्वर' से होता है" ।**
* **"सीखी हुई शिक्षा ही मनुष्य की सबसे बड़ी संपत्ति है" ।**
* **"मधुर वचन बोलना सबसे हड़ा आभूषण है" ।**
* **"दया और करुणा से बढ़कर कोई गुण नहीं है" ।**
* **"सत्य का मार्ग अपनाने वाला व्यक्ति सदैव सम्मान पाता है" ।**

'तिरुक्कुरल' केवल एक पुस्तक नहीं, बल्कि जीवन को सही दिशा देने वाला मार्गदर्शक है । इसकी शिक्षाएँ हमें एक अच्छा और जिम्मेदार नागरिक बनने की प्रेरणा देती हैं । निष्कर्ष के रूप में यह कह सकते हैं कि तिरुक्कुरल विश्व साहित्य की अमूल्य धरोहर है और मानवता के लिए ज्ञान का अनंत स्रोत है । "ज्ञान, सत्य और करुणा - यही तिरुक्कुरल का संदेश है" ।

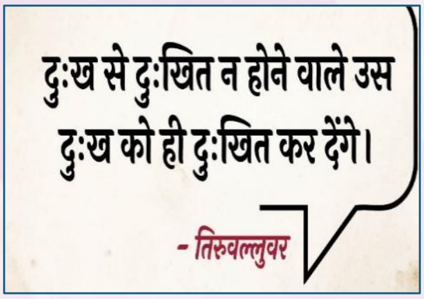

आम प्रयोग के अंग्रेज़ी-हिंदी वाक्यांश		
क्र.सं.	**अंग्रेज़ी**	**हिंदी**
1.	Acknowledgement has already been sent	पावती पहले ही भेजी जा चुकी है
2.	Action may be taken accordingly	तदनुसार कार्रवाई की जाए
3.	As required under the rules	जैसा कि नियमों के अधीन अपेक्षित है
4.	Brief note is placed below	संक्षिप्त नोट नीचे रखा है
5.	Brought forward	अग्रानीत
6.	By any means	किसी भी प्रकार से
7.	Checked and found correct	जांच की और सही पाया
8.	Sanction of competent authority is necessary	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है
9.	Corrections and alterations	संशोधन और परिवर्तन
10.	Day to day work	दैनंदिन कार्य

11.	Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
12.	Duly sanctioned	विधिवत् मंजूर किया हुआ
13.	Early orders are solicited	शीघ्र आदेश देने की कृपा करें
14.	Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
15.	Empowered to sanction	मंजूरी देने का अधिकार है
16.	Forwarded and recommended	अग्रेषित और संस्तुत
17.	From time to time	समय-समय पर
18.	For early compliance	शीघ्र अनुपालन के लिए
19.	Give top priority to this work	इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता दें
20.	Hard and fast rule	पक्का नियम
21.	I am directed to state that	मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि
22.	In continuation of	के सिलसिले में
23.	Justification has been accepted	औचित्य स्वीकार कर लिया गया है
24.	Kindly review the case	कृपया मामले पर पुनर्विचार करें
25.	Laid down in	में निर्धारित
26.	Letter of acknowledgement	पावती
27.	May be treated as urgent	इसे अति आवश्यक समझा जाए
28.	Noted for future guidance	भावी मार्गदर्शन के लिए नोट कर लिया
29.	Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
30.	Please acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें
31.	Please treat this as strictly confidential	इसे सर्वथा गोपनीय समझें
32.	Reminder may be sent	अनुस्मारक भेजा जाए
33.	Sanction of the competent authority may be obtained	सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी ली जाए
34.	Submitted for perusal	अवलोकनार्थ प्रस्तुत
35.	Through proper channel	उचित माध्यम से
36.	Timely compliance may be ensured	समय पर अनुपालन सुनिश्चित कर लिया जाए
37.	Until further order	दूसरा आदेश मिलने तक
38.	Verified and found correct	पड़ताल की और ठीक पाया
39.	With retrospective effect	पूर्वव्यापी प्रभाव सहित
40.	You may take necessary action	आप तदनुसार आवश्यक कार्रवाई करें

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2026-27 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 70% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 100% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4. ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 90% के राज्य/संघ राज्यक्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 60% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 60% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 60% 4.ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र 60% के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	80%	55%	35%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	75%	65%	35%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	45%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	70%	60%	35%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक,ई-हिंदी समाचार पत्र, सीडी/डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%

10. हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में काम करने की सुविधायुक्त इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों जिनमें कंप्यूटर भी शामिल है, की खरीद।	100%	100%	100%
11. वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12. नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि द्विभाषी रूप में प्रदर्शित किए जाएं ।	100%	100%	100%
13. (i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)	30% (न्यूनतम)
(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण	
14. राजभाषा संबंधी बैठकें			
(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें	
(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक),	
(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
15. कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16. मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**45%**	**35%**	**25%**
		(न्यूनतम अनुभाग)	
	सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 45%, "ख" क्षेत्र में 30% और "ग" क्षेत्र में 20% कार्य हिंदी में किया जाए ।		

01.10.2025 से 31.03.2026 की अवधि के दौरान सेवानिवृत्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों की सूची			
क्र.सं.	नाम (श्री / श्रीमती)	पदनाम	सेवानिवृत्ति की तारीख
1.	कृष्णाकुमारी पी एस	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.10.2025
2.	योगेश ए	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.12.2025
3.	मिनी मैथ्यू	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	31.01.2026
4.	लीलाधरन पी वी	वरिष्ठ लेखा अधिकारी	28.02.2026
5.	हरिदासन वी एन	सहायक पर्यवेक्षक	31.10.2025
6.	कृष्णन ए एस	पर्यवेक्षक	31.10.2025
7.	ब्रिंदा आर एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.12.2025
8.	जलजाकुमारी जी एस	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2025
9.	साबू डी	सहायक पर्यवेक्षक	31.12.2025
10.	मिनी एम के	पर्यवेक्षक	31.01.2026
11.	रोसम्मा देवसिया	पर्यवेक्षक	31.01.2026
12.	मेरी जोसफ	पर्यवेक्षक	28.02.2026
13.	विजयलक्ष्मी एस के	सहायक लेखा अधिकारी	28.02.2026
14.	मधु एन आर	वरिष्ठ लेखाकार	28.02.2026
15.	दुर्गा दास पी एस	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2026
16.	षाइनी जोस	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2026
17.	वसंताकुमारी आर (नं. 2)	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2026
18.	राजेश जी	सहायक लेखा अधिकारी	31.03.2026
19.	उमा बी	सहायक पर्यवेक्षक	31.03.2026
20.	रमा देवी एस	लेखाकार	31.03.2026

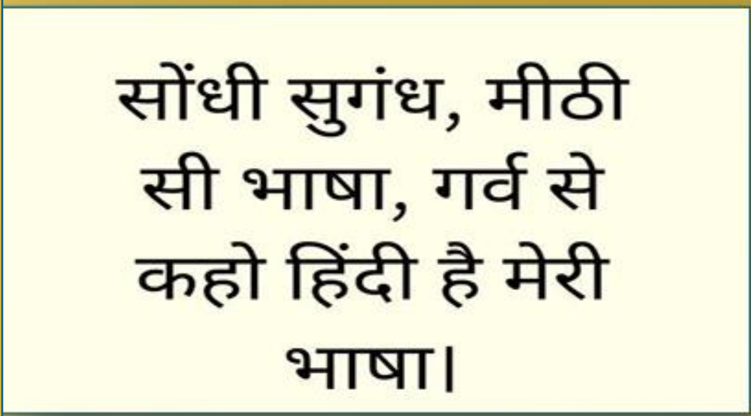

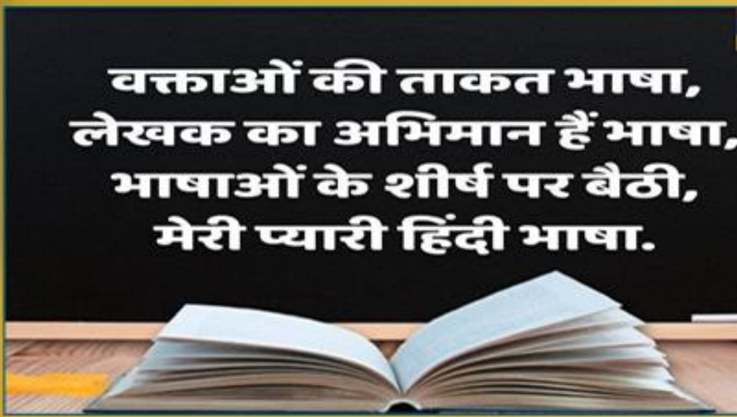

प्रकाशक

महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम – 695 001